CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2024 with Solution PDF-Set 2/3/2

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक:** 80

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 8 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने,
मैं कब कहता हूँ जीवन-मरु नंदन-कानन का फूल बने ?
काँटा कठोर है, तीखा है, उसमें उसकी मर्यादा है,
मैं कब कहता हूँ वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने ?
मैं कब कहता हूँ मुझे युद्ध में कहीं न तीखी चोट मिले ?
मैं कब कहता हूँ प्यार करूँ तो मुझे प्राप्ति की ओट मिले ?
मैं कब कहता हूँ विजय करूँ मेरा ऊँचा प्रासाद बने ?
या पात्र जगत की श्रद्धा की मेरी धुँधली-सी याद बने ?
पथ मेरा रहे प्रशस्त सदा क्यों विकल करे यह चाह मुझे ?
नेतृत्व न मेरा छिन जावे क्यों इसकी हो परवाह मुझे ?
मैं प्रस्तुत हूँ चाहे मेरी मिट्टी जनपद की धूल बने –
फिर उस धूली का कण-कण भी मेरा गति-रोधक शूल बने ! [5 अंक]

1(i). मैं कब कहता हूँ – पंक्ति में 'कब' क्या इंगित करता है ? [1 अंक]

(A) सदैव निराकांक्षी
(B) सदैव आकांक्षी
(C) सदैव अभिलाषी
(D) सदैव अस्थिर

सही उत्तर: (A) सदैव निराकांक्षी

हल:

अवधारणा:

- बार-बार आए प्रश्न के पीछे छिपे निषेध को पहचानना आवश्यक है।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें कवि कहता है कि वह संसार को अपने अनुकूल बनाने, चोट से बचने अथवा यश पाने की माँग नहीं करता। यहाँ प्रश्न वास्तविक समय पूछने के लिए नहीं, ऐसी अपेक्षा का निषेध करने के लिए है।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें 'मैं कब कहता हूँ' का भाव है कि मैं ऐसी माँग कभी नहीं करता। इससे सुख, सुविधा और प्रसिद्धि की कामना से मुक्त निराकांक्षी दृष्टि स्पष्ट होती है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (B) सदैव आकांक्षी और (C) सदैव अभिलाषी में इच्छा का आग्रह है, जिसका कवि निषेध करता है। (D) अस्थिर भी अनुचित है क्योंकि कठिनाइयों के प्रति उसकी स्वीकृति दृढ़ है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : सदैव निराकांक्षी।

त्वरित सुझाव: कब को समय पूछने वाला शब्द मानने से पहले देखें कि पूरी कविता सुख और यश की माँग का निषेध करती है।

1(ii). संसार के विषय में कवि का क्या विचार है ? [1 अंक]

(A) संसार उसकी गति से चले

(B) संसार तीव्र गति से चले

(C) संसार धीमी गति से चले

(D) संसार अपनी गति से चले

सही उत्तर: (D) संसार अपनी गति से चले

हल:

अवधारणा:

- कवि की अपेक्षा और संसार की स्वतंत्र गति में अंतर समझना चाहिए।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें 'मैं कब कहता हूँ जग मेरी दुर्धर गति के अनुकूल बने' में कवि अपने लिए संसार के बदलने का आग्रह छोड़ता है। वह कठिन परिस्थितियों को उनके मूल रूप में स्वीकार करने को तैयार है।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें इसका आशय है कि संसार अपनी गति और प्रकृति के अनुसार चले। कवि उससे निजी सुविधा के लिए तालमेल बैठाने की शर्त नहीं रखता।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) उसकी गति से चलने की माँग उक्त पंक्ति के विपरीत है। (B) तीव्र और (C) धीमी गति का आग्रह भी नहीं है; कविता गति की मात्रा नहीं, निजी अनुकूलता की अपेक्षा का निषेध करती है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : संसार अपनी गति से चले।

त्वरित सुझाव: जग मेरी गति के अनुकूल बने के निषेध से संसार की अपनी गति स्वीकार करने का अर्थ निकालें।

1(iii). "वह घटकर प्रांतर का ओछा फूल बने" से कवि का तात्पर्य है : [1 अंक]

(A) जीवन से विपत्तियों का समाप्त हो जाना

(B) काँटों का फूलों की शरण में चले जाना

(C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना

(D) काँटे का कोमल फूल के रूप में बदल जाना

सही उत्तर: (C) विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना

हल:

अवधारणा:

- काँटा और फूल यहाँ जीवन की विपरीत तथा अनुकूल परिस्थितियों के प्रतीक हैं।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें पहले काँटे की कठोरता और तीखेपन को उसकी मर्यादा कहा गया है। कवि नहीं चाहता कि काँटा अपनी प्रकृति छोड़कर फूल बन जाए; वह कठिनाइयों को भी जीवन का स्वाभाविक अंग मानता है।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें इस प्रतीकात्मक प्रयोग में काँटे का फूल बनना विपत्तियों के सुखद परिस्थितियों में बदलने का बोध कराता है। कवि ऐसी सुविधा की माँग नहीं करता।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) विपत्तियों का समाप्त होना उनके सुखद रूप में ढलने से अलग है। (B) शरण में जाने की कोई बात नहीं है। (D) केवल शाब्दिक परिवर्तन बताता है, जबकि प्रश्न कवि का तात्पर्य पूछता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : विपत्तियों का सुखद परिस्थितियों में ढल जाना।

त्वरित सुझाव: काँटे और फूल को क्रमशः विपत्ति और सुख का प्रतीक मानकर तात्पर्य चुनें, केवल शाब्दिक अर्थ नहीं।

1(iv). कवि के अनुसार जीवन की सार्थकता क्या है ? [1 अंक]

(A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में

(B) सुख एवं सुविधाजनक स्थिति में

(C) परस्पर ईर्ष्या-द्वेष में

(D) शक्ति प्रदर्शन एवं नेतृत्व में

सही उत्तर: (A) संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में

हल:

अवधारणा:

- कविता का संदेश चुनते समय सभी पंक्तियों में व्यक्त समान जीवन-दृष्टि देखें।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें कवि युद्ध की तीखी चोट से बचने की माँग नहीं करता। वह अपनी मिट्टी के जनपद की धूल बन जाने और उस धूल के भी बाधक बनने तक की स्थिति के लिए प्रस्तुत है।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें इन कथनों से संकटों के बीच कर्म करते रहने और दुखों का साहसपूर्वक सामना करने का आदर्श निकलता है। सार्थक जीवन संघर्ष में सक्रिय बने रहने में है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (B) सुख-सुविधा के आग्रह को कवि छोड़ चुका है। (C) ईर्ष्या-द्वेष की प्रशंसा कहीं नहीं है। (D) भी गलत है क्योंकि कवि नेतृत्व छिन जाने की चिंता को भी अनावश्यक मानता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : संघर्ष एवं दुखों से लड़ने में।

त्वरित सुझाव: चोट स्वीकारने और नेतृत्व की चिंता छोड़ने वाली पंक्तियों को जोड़कर संघर्ष का संदेश पहचानें।

1(v). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	जीवन-मरु	(i)	सुखद परिस्थितियाँ
2.	नंदन-कानन	(ii)	विपरीत परिस्थितियाँ
3.	गति-रोधक	(iii)	उत्तरोत्तर उन्नति में बाधक

विकल्प : [1 अंक]

(A) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(B) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

(C) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

सही उत्तर: (B) 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में प्रयुक्त समस्त पदों का संदर्भानुकूल अर्थ लेकर मिलान करें।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें जीवन-मरु में मरु अर्थात मरुस्थल का संकेत जीवन की कठिन और विपरीत परिस्थितियों की ओर है। इसलिए 1 का मिलान (ii) से होगा।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें नंदन-कानन आनंददायक उपवन का बिंब है, इसलिए यह सुखद परिस्थितियों अर्थात (i) से जुड़ता है। गति-रोधक उन्नति की गति रोकने वाला है, इसलिए 3 का संबंध (iii) से है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) पहले दोनों अर्थों को उलट देता है। (C) जीवन-मरु को उन्नति में बाधक और गति-रोधक को सुखद कहता है। (D) भी जीवन-मरु तथा गति-रोधक के अर्थ बदल देता है। अत: केवल एक क्रम तीनों अर्थों से मेल खाता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : 1-(ii), 2-(i), 3-(iii)।

त्वरित सुझाव: पहले जीवन-मरु को विपरीत और नंदन-कानन को सुखद परिस्थितियों से मिलाएँ; फिर गति-रोधक जाँचें।

---

2. सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तम्भ हैं – प्रथम - सुसंस्कार और द्वितीय - सत्संगति। सुसंस्कार जीवन की सत्संगति व सत्कर्मों की अर्जित संपत्ति है और सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है। जिस प्रकार कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है, ठीक उसी प्रकार कुमार्गी का कालुष्य सत्संगति से स्वर्णिम आभा में परिवर्तित हो जाता है। सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है और अच्छे विचार मनुष्य को अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करते हैं। परिणामत: सुचरित्र का निर्माण होता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है – "महाकवि टैगोर के पास बैठने मात्र से ऐसा प्रतीत होता था मानो भीतर का देवता जाग गया हो।"

वस्तुत: चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है। चरित्रवान व्यक्ति ही समाज की शोभा है, शक्ति है। सुचारित्र्य से व्यक्ति ही नहीं, समाज भी सुवासित होता है और इस सुवास से राष्ट्र यशस्वी बनता है। विदुर जी की उक्ति अक्षरश: सत्य है कि सुचरित्र के बीज हमें भले ही वंश परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं पर चरित्र-निर्माण व्यक्ति के अपने बलबूते पर निर्भर है। आनुवंशिक परंपरा, परिवेश और परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकते हैं पर उसका अर्जन नहीं कर सकते; वह व्यक्ति को उत्तराधिकार में प्राप्त नहीं होता। व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र होने से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है क्योंकि व्यक्ति पूरे राष्ट्र का एक घटक है। अनेक व्यक्तियों से मिलकर एक परिवार, अनेक परिवारों से एक कुल, अनेक कुलों से एक जाति या समाज और अनेकानेक जातियों और समाज-समुदायों से मिलकर ही एक राष्ट्र बनता है। आज जब लोग राष्ट्रीय चरित्र निर्माण की बात करते हैं, तब वे स्वयं उस राष्ट्र के आचरक घटक हैं – इस बात को विस्मृत कर देते हैं। [10 अंक]

2(i). "सत्संगति वर्तमान जीवन की दुर्लभ विभूति है।" पंक्ति में रेखांकित पद का आशय हो सकता है : [1 अंक]

(A) विलक्षण विचार

(B) विलक्षण वैभव

(C) विलक्षण भाव

(D) विलक्षण विवेक

सही उत्तर: (B) विलक्षण वैभव

हल:

अवधारणा:

- शब्द का अर्थ उसके आस-पास प्रयुक्त विचारों के सहारे निर्धारित करें।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें गद्यांश में सुसंस्कार को अर्जित संपत्ति और सत्संगति को दुर्लभ विभूति कहा गया है। इससे स्पष्ट होता है कि लेखक अच्छी संगति को जीवन का मूल्यवान धन मानता है।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें विभूति का यहाँ आशय वैभव या संपदा है और दुर्लभ उसकी विशेषता बताता है। इसलिए उपलब्ध विकल्पों में विलक्षण वैभव इस पद के सबसे निकट है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) विचार, (C) भाव और (D) विवेक अच्छी संगति से प्रभावित हो सकते हैं, पर वे विभूति के इस संदर्भगत अर्थ को व्यक्त नहीं करते। प्रश्न सत्संगति का परिणाम नहीं, रेखांकित पद का अर्थ पूछता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : विलक्षण वैभव।

त्वरित सुझाव: विभूति का अर्थ चुनते समय पिछले वाक्य की अर्जित संपत्ति को संकेत बनाकर वैभव वाला विकल्प देखें।

2(ii). सुचारित्र्य के सशक्त स्तम्भ हैं : [1 अंक]

(A) संपत्ति और सुसंस्कार

(B) सत्संगति और आनुवंशिकता

(C) सुसंस्कार और परिवेश

(D) सुसंस्कार और सत्संगति

सही उत्तर: (D) सुसंस्कार और सत्संगति

हल:

अवधारणा:

- स्पष्ट रूप से दी गई सूचना के लिए उसी वाक्य के मुख्य शब्द पहचानें।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें गद्यांश के आरंभ में ही बताया गया है कि सुचारित्र्य के दो सशक्त स्तम्भ हैं : प्रथम सुसंस्कार और द्वितीय सत्संगति। उत्तर इसी प्रत्यक्ष कथन पर आधारित है।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें सुसंस्कार अच्छे आचरण का आधार बनते हैं और सत्संगति विचारों को सही दिशा देकर अच्छे कर्मों की प्रेरणा देती है। दोनों मिलकर सुचरित्र के निर्माण में सहायक हैं।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) में संपत्ति, (B) में आनुवंशिकता और (C) में परिवेश को स्तम्भ बनाया गया है। ये मूल वाक्य के दोनों निर्दिष्ट आधार नहीं हैं। आनुवंशिकता और परिवेश को आगे केवल प्रेरणा देने वाला बताया गया है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : सुसंस्कार और सत्संगति।

त्वरित सुझाव: सुचारित्र्य के स्तम्भ पूछे जाएँ तो प्रथम और द्वितीय के बाद आए दोनों पदों को सीधे मिलाएँ।

2(iii). संदर्भ के अनुसार गद्यांश में 'कालुष्य' शब्द का सटीक अर्थ क्या हो सकता है ? [1 अंक]

(A) दोष

(B) कालिमा

(C) लघुता

(D) प्रभास

सही उत्तर: (B) कालिमा

हल:

अवधारणा:

- उपमा में प्रयुक्त संबंधित शब्दों और विपरीत बिंबों से अर्थ स्पष्ट करें।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें कुधातु की कठोरता और कालिख के बदलने की तुलना कुमार्गी के कालुष्य के स्वर्णिम आभा में बदलने से की गई है। कालिख और स्वर्णिम आभा का विरोध शब्दार्थ की कुंजी है।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें इस संदर्भ में कालुष्य का सटीक अर्थ कालिमा है। कुमार्गी के प्रसंग में यह मन और आचरण की मलिनता का भी संकेत देती है, जो सत्संगति से दूर होती है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) दोष व्यापक भावार्थ है, जबकि कालिमा मूल तुलना से अधिक सटीक मेल खाती है। (C) लघुता आकार या हीनता का भाव देती है। (D) प्रभास चमक का संकेत है और यहाँ कालुष्य के विपरीत है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : कालिमा।

त्वरित सुझाव: कालुष्य के ठीक पहले आए कालिख और बाद की स्वर्णिम आभा को मिलाकर कालिमा का अर्थ पहचानें।

2(iv). गद्यांश के अनुसार सतत सत्संगति से क्या प्राप्त होता है ? [1 अंक]

(A) निर्माण को नई दिशा

(B) भ्रमण करने का मार्ग

(C) विचारों को नई दिशा

(D) विचरण करने का मार्ग

सही उत्तर: (C) विचारों को नई दिशा

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसी प्रक्रिया के तत्काल परिणाम और आगे के परिणाम को अलग पहचानें।
- सही उत्तर चुनने के लिए पाठ के प्रमाण और सभी विकल्पों का परस्पर मिलान आवश्यक है।

चरण 1: पाठ का प्रमाण पहचानें लेखक का प्रत्यक्ष कथन है कि सतत सत्संगति से विचारों को नई दिशा मिलती है। इसके बाद अच्छे विचार अच्छे कर्मों के लिए प्रेरित करते हैं और फलस्वरूप सुचरित्र बनता है।

चरण 2: अर्थ और आशय समझें प्रश्न सतत सत्संगति से प्राप्त होने वाली बात पूछता है। इसलिए उत्तर विचारों को नई दिशा मिलना है; यही दिए गए वाक्य की स्पष्ट सूचना है।

चरण 3: अन्य विकल्पों की जाँच करें (A) में निर्माण को नई दिशा कहा गया है, जबकि मूल वाक्य में विचारों का उल्लेख है। (B) भ्रमण और (D) विचरण शारीरिक घूमने से संबंधित हैं; गद्यांश मानसिक एवं नैतिक परिवर्तन की चर्चा करता है।

चरण 4: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : विचारों को नई दिशा।

त्वरित सुझाव: सतत सत्संगति के बाद वाली पंक्ति में विचारों को नई दिशा शब्द खोजें; घूमने से जुड़े विकल्प हटाएँ।

2(ix). आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कथन के माध्यम से लेखक ने उल्लेख किया है : [1 अंक]

(A) सत्संगति के प्रभाव को

(B) हजारी प्रसाद की उदारता को

(C) महाकवि टैगोर की दिव्यता को

(D) चरित्र निर्माण के प्रयासों को

सही उत्तर: (A) सत्संगति के प्रभाव को

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में किसी कथन का प्रयोजन समझने के लिए उसके पहले और बाद का विचार देखा जाता है।
- उत्तर के चयन में प्रसंग से प्रत्यक्ष प्रमाण लेना और प्रत्येक विकल्प के आशय का उससे मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और मुख्य आधार टैगोर के पास बैठने से भीतर का देवता जागने का अनुभव बताया गया है। यह श्रेष्ठ व्यक्ति की संगति से होने वाले आंतरिक परिवर्तन का उदाहरण है।

चरण 2: विकल्पों का परीक्षण (A) सही है, क्योंकि उदाहरण सत्संगति के प्रभाव को स्पष्ट करता है। (B) में द्विवेदी जी की उदारता की चर्चा नहीं है। (C) में टैगोर की दिव्यता तक अर्थ सीमित हो जाता है, जबकि लेखक संगति का प्रभाव समझा रहा है। (D) में व्यक्तिगत प्रयासों की बात है, पर यहाँ केवल पास बैठने का प्रभाव प्रमुख है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : सत्संगति के प्रभाव को।

त्वरित सुझाव: उद्धरण का उद्देश्य खोजते समय उसके ठीक पहले व्यक्त मुख्य विचार से संबंध जोड़िए।

2(v). गद्यांश में 'भीतर का देवता' कथन किस बात की ओर संकेत करता है ? [1 अंक]

(A) ईश्वर का आभास

(B) दिव्यगुणों का आभास

(C) सत्य का आभास

(D) परिवेश का आभास

सही उत्तर: (B) दिव्यगुणों का आभास

हल:

अवधारणा:

- रूपकात्मक अभिव्यक्ति का अर्थ पूरे प्रसंग में समझा जाता है; यहाँ विषय सुचरित्र और सत्संगति है।
- उत्तर के चयन में प्रसंग से प्रत्यक्ष प्रमाण लेना और प्रत्येक विकल्प के आशय का उससे मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और मुख्य आधार भीतर का देवता जागने का अर्थ मनुष्य के भीतर विद्यमान श्रेष्ठता, सद्भाव और नैतिक गुणों का सक्रिय होना है। टैगोर की संगति इन दिव्य गुणों का अनुभव कराती है।

चरण 2: अन्य अर्थों से अंतर (B) में दिव्यगुणों का आभास इस आंतरिक परिवर्तन का सटीक अर्थ है। (A) का ईश्वर का आभास शाब्दिक धार्मिक अर्थ है। (C) का सत्य का आभास केवल एक गुण तक सीमित है। (D) का परिवेश का आभास बाहरी वातावरण से संबंधित है, जबकि कथन भीतर के गुणों की ओर संकेत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (B) है : दिव्यगुणों का आभास।

त्वरित सुझाव: देवता शब्द का शाब्दिक अर्थ चुनने से पहले गद्यांश में उसके नैतिक और प्रतीकात्मक आशय को देखिए।

2(vi). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :

कथन I : शिथिल चरित्र से ही जीवन सार्थक है।

कथन II : शिथिल चरित्र से ही राष्ट्र निर्माण संभव है।

कथन III : आनुवंशिक परंपरा से ही चरित्र अर्जन संभव है।

कथन IV : उदात्त चरित्र से ही जीवन की सार्थकता है।

गद्यांश के अनुसार उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं ? [1 अंक]

(A) केवल कथन I सही है।

(B) केवल कथन II और III सही हैं।

(C) केवल कथन IV सही है।

(D) केवल कथन II सही है।

सही उत्तर: (C) केवल कथन IV सही है।

हल:

अवधारणा:

- प्रत्येक कथन को गद्यांश में व्यक्त विचार से मिलाना चाहिए; केवल समान शब्द होने से कथन सत्य नहीं हो जाता।
- उत्तर के चयन में प्रसंग से प्रत्यक्ष प्रमाण लेना और प्रत्येक विकल्प के आशय का उससे मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और मुख्य आधार कथन I असत्य है, क्योंकि जीवन की सार्थकता शिथिल चरित्र में नहीं, सुचरित्र में है। कथन II भी असत्य है; शिथिल चरित्र राष्ट्र पर संकट लाता है। कथन III असत्य है, क्योंकि आनुवंशिक परंपरा प्रेरणा दे सकती है, चरित्र का अर्जन स्वयं करना पड़ता है।

चरण 2: सत्य कथन और विकल्प कथन IV सही है : उदात्त चरित्र जीवन को सार्थक बनाता है। इसलिए (C) उचित है। (A) में असत्य कथन I, (B) में असत्य कथन II और III तथा (D) में असत्य कथन II को सही कहा गया है; ये तीनों विकल्प गद्यांश के विरुद्ध हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : केवल कथन IV सही है।

त्वरित सुझाव: हर कथन में चरित्र के विशेषण और ही जैसे सीमाबोधक शब्द पर ध्यान देकर गद्यांश से मिलान कीजिए।

2(vii). 'कुधातु की कठोरता और कालिख पारस के स्पर्श से कोमलता और कमनीयता में बदल जाती है।' इस उदाहरण के मूल भाव को व्यक्त करने वाली कहावत है : [1 अंक]

(A) परहित सरिस धर्म नहीं भाई

(B) बिनु सत्संग विवेक न होई

(C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई

(D) जहाँ सुमति तहँ संपत्ति नाना

सही उत्तर: (C) सठ सुधरहिं सतसंगति पाई

हल:

अवधारणा:

- उदाहरण और कहावत में समान केंद्रीय भाव होना चाहिए। यहाँ प्रमुख भाव बुराई का अच्छी संगति से अच्छाई में बदलना है।
- उत्तर के चयन में प्रसंग से प्रत्यक्ष प्रमाण लेना और प्रत्येक विकल्प के आशय का उससे मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और मुख्य आधार पारस के स्पर्श से कुधातु के बदलने की तुलना कुमार्गी के सत्संगति से सुधरने से की गई है। अतः सुधार और परिवर्तन को प्रत्यक्ष व्यक्त करने वाली कहावत सबसे उपयुक्त होगी।

चरण 2: कहावतों की तुलना (C) का अर्थ है कि दुष्ट भी सत्संगति पाकर सुधर जाते हैं। (A) परोपकार को श्रेष्ठ धर्म कहता है। (B) सत्संग से विवेक प्राप्त होने की बात कहता है, किंतु यहाँ सुधार का भाव अधिक विशिष्ट है। (D) अच्छी बुद्धि से संपन्नता मिलने की बात करता है। इसलिए अन्य विकल्प इस उदाहरण के मूल भाव को उतनी सटीकता से नहीं कहते।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (C) है : सठ सुधरहिं सतसंगति पाई।

त्वरित सुझाव: दृष्टांत में हुए परिवर्तन को पहचानिए और उसी परिवर्तन को स्पष्ट करने वाली कहावत चुनिए।

2(viii). विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में क्या सत्य नहीं है ? [1 अंक]

(A) सुचरित्र के बीज परंपरा से प्राप्त हो सकते हैं।

(B) चरित्र निर्माण व्यक्ति के स्वयं के प्रयासों पर निर्भर है।

(C) परिस्थिति उसे केवल प्रेरणा दे सकती है।

(D) चरित्र निर्माण संगति से होता है।

सही उत्तर: (D) चरित्र निर्माण संगति से होता है।

हल:

अवधारणा:

- प्रश्न में नहीं शब्द महत्त्वपूर्ण है। उत्तर विदुर जी की उक्ति के संदर्भ में चुनना है, पूरे गद्यांश के सामान्य विषय के आधार पर नहीं।
- उत्तर के चयन में प्रसंग से प्रत्यक्ष प्रमाण लेना और प्रत्येक विकल्प के आशय का उससे मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और मुख्य आधार विदुर जी की उक्ति के अनुसार सुचरित्र के बीज वंश परंपरा से मिल सकते हैं, किंतु चरित्र का वास्तविक निर्माण व्यक्ति के अपने प्रयासों पर निर्भर है। परंपरा और परिस्थिति केवल प्रेरक हैं।

चरण 2: चारों विकल्पों की जाँच (A), (B) और (C) इसी उक्ति की पुष्टि करते हैं : बीज परंपरा से मिलना, स्वयं प्रयास करना और परिस्थिति से प्रेरणा मिलना। (D) संगति को चरित्र निर्माण का आधार बताता है। सत्संगति का महत्त्व गद्यांश में अन्यत्र है, पर यह विदुर जी की उक्त विशिष्ट उक्ति का आशय नहीं है। इसलिए इस संदर्भ में अपेक्षित उत्तर (D) है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : चरित्र निर्माण संगति से होता है।

त्वरित सुझाव: नहीं वाले प्रश्न में दिए गए संदर्भ की सीमा देखिए; सामान्य सत्य भी उस विशेष उक्ति का आशय नहीं हो सकता।

2(x). शिथिल चरित्र सम्पूर्ण राष्ट्र को कैसे प्रभावित करता है ? [1 अंक]

(A) राष्ट्र शिथिल हो जाता है

(B) राष्ट्र का विकास रुक जाता है

(C) राष्ट्र का उत्थान करता है

(D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है

सही उत्तर: (D) राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में राष्ट्र अनेक व्यक्तियों, परिवारों और समाजों से बना है; इसलिए व्यक्तिगत आचरण का राष्ट्रीय प्रभाव होता है।
- उत्तर के चयन में प्रसंग से प्रत्यक्ष प्रमाण लेना और प्रत्येक विकल्प के आशय का उससे मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और मुख्य आधार लेखक स्पष्ट कहता है कि व्यक्ति-विशेष के शिथिल चरित्र से पूरे राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है। व्यक्ति राष्ट्र का घटक है, अतः उसका नैतिक पतन व्यापक सामाजिक चरित्र को प्रभावित करता है।

चरण 2: विकल्पों का मूल्यांकन (D) गद्यांश के प्रत्यक्ष कथन को व्यक्त करता है। (A) में राष्ट्र के शिथिल हो जाने का अस्पष्ट सामान्यीकरण है। (B) में विकास रुकने की बात कही गई है, जिसका यहाँ प्रत्यक्ष उल्लेख नहीं है। (C) में उत्थान का अर्थ कथन के विपरीत है। प्रश्न का सबसे सटीक उत्तर चरित्र संकट ही है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (D) है : राष्ट्र पर चरित्र संकट उपस्थित हो जाता है।

त्वरित सुझाव: जब गद्यांश में प्रभाव सीधे लिखा हो, अनुमान लगाने के बजाय उसी स्पष्ट परिणाम वाला विकल्प चुनिए।

3(i). यशोधर बाबू अपने मातहतों से छुट्टी के समय मनोरंजक बात क्यों करते थे ? [1 अंक]

(A) दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

(B) अपने काम का भार अपने मातहतों पर डालने के लिए

(C) कर्मचारियों को देर तक दफ़्तर में रोकने के लिए

(D) कर्मचारियों और अपने बीच की दूरी समाप्त करने के लिए

सही उत्तर: (A) दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- कथा के प्रसंग में पात्र के व्यवहार का तात्कालिक उद्देश्य पहचानना चाहिए। यशोधर बाबू दफ्तर में अनुशासन और औपचारिकता रखते हैं।
- उत्तर के चयन में प्रसंग से प्रत्यक्ष प्रमाण लेना और प्रत्येक विकल्प के आशय का उससे मिलान करना आवश्यक है।

चरण 1: प्रसंग और मुख्य आधार छुट्टी के समय वे मातहतों से कुछ मनोरंजक बातें करते थे। इसका उद्देश्य दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करना था, जिससे कामकाज की कठोरता के बाद वातावरण हलका हो सके।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण (A) इस प्रसंग का सही कारण बताता है। (B) में काम का भार दूसरों पर डालने और (C) में कर्मचारियों को रोकने का उद्देश्य बताया गया है; दोनों का प्रसंग में आधार नहीं है। (D) में दूरी समाप्त करने की व्यापक बात है, जबकि यहाँ स्पष्ट उद्देश्य दिनभर की शुष्कता दूर करना है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : दिनभर के शुष्क व्यवहार का निराकरण करने के लिए।

त्वरित सुझाव: पात्र के सामान्य स्वभाव और प्रश्न में पूछे गए विशेष समय के उद्देश्य के बीच अंतर रखिए।

3(ii). "हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है।" यह कथन किसके द्वारा किसे संबोधित कर कहा गया है ? [1 अंक]

(A) यशोधर बाबू द्वारा अपने बेटे भूषण को

(B) यशोधर बाबू द्वारा अपनी बड़ी बेटी को

(C) यशोधर बाबू द्वारा अपनी पत्नी को

(D) यशोधर बाबू द्वारा चड्ढा को

सही उत्तर: (A) यशोधर बाबू द्वारा अपने बेटे भूषण को

हल:

अवधारणा:

- संवाद का वक्ता और श्रोता पहचानने के लिए उसके ठीक पहले की बातचीत देखनी चाहिए।
- घर और कार्यालय के अलग प्रसंगों को मिलाने से पात्रों की पहचान में भूल हो सकती है।

चरण 1: घर लौटने का प्रसंग यशोधर बाबू के घर पहुँचने पर भूषण उन्हें सिल्वर वैडिंग के दिन देर से आने की बात कहता है। वह बताता है कि उसके बॉस उनकी राह देख रहे थे। इसी बातचीत के उत्तर में यशोधर बाबू पूछते हैं कि हम लोगों के यहाँ सिल्वर वैडिंग कब से होने लगी है।

चरण 2: वक्ता और श्रोता का मिलान इस कथन के वक्ता यशोधर बाबू हैं और संबोधित व्यक्ति उनका बेटा भूषण है। इसलिए (A) सही है। (B) में बड़ी बेटी और (C) में पत्नी को श्रोता बताया गया है, जबकि यह बातचीत भूषण से हो रही है। (D) में चड्ढा का नाम है, जो कार्यालय के प्रसंग से जुड़ा है; प्रस्तुत संवाद घर का है, इसलिए वह विकल्प भी उचित नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष सही विकल्प (A) है : यशोधर बाबू द्वारा अपने बेटे भूषण को।

त्वरित सुझाव: उद्धृत कथन से पहले बोलने वाले पात्र को पहचानिए; उसी से संबोधित व्यक्ति का पता चलेगा।

3(iii). 'जूझ' कहानी के लेखक को कविता लिखने की प्रेरणा किससे मिली ? [1 अंक]

(A) अपने पिता से

(B) अपनी माँ से

(C) न.वा. सौंदलगेकर से

(D) अपने मित्र से

सही उत्तर: (C) न.वा. सौंदलगेकर से

हल:

अवधारणा:

- कविता लिखने की प्रेरणा शिक्षक के काव्य-पाठ और उनके मार्गदर्शन से जुड़ी है।
- विकल्प का चयन पाठ के विशिष्ट प्रसंग से करें, केवल सामान्य अर्थ या अनुमान से नहीं।

चरण 1: पाठ का प्रसंग पहचानें सौंदलगेकर मास्टर कविता को लय, भाव और तन्मयता के साथ पढ़ाते थे। उनके पढ़ाने से आनंदा को कविता के सौंदर्य का अनुभव हुआ और वह स्वयं भी शब्दों तथा लय में अपनी अनुभूतियाँ व्यक्त करने लगा।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें पिता मुख्यतः खेती के काम पर ज़ोर देते थे। माँ पढ़ाई में सहायक थीं, पर इस प्रसंग में काव्य-प्रेरणा का स्रोत वे नहीं हैं। मित्र का विकल्प भी मास्टर के काव्य-पाठ वाले प्रसंग से मेल नहीं खाता।

चरण 3: निष्कर्ष लेखक को न.वा. सौंदलगेकर से कविता लिखने की प्रेरणा मिली। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: प्रेरणा का प्रश्न देखते ही कविता को सस्वर पढ़ाने वाले सौंदलगेकर मास्टर का प्रसंग याद करें।

3(iv). निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और उचित विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I : वसंत पाटील पढ़ने में बहुत कमजोर था।

कथन II : वसंत पाटील आनंदा का शत्रु था।

कथन III : वसंत पाटील कक्षा का मॉनीटर था।

कथन IV : वसंत पाटील कक्षा बारहवीं का छात्र था।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन I तथा II सही हैं।

(B) कथन I, II तथा III सही हैं।

(C) कथन III सही है।

(D) कथन IV सही है।

सही उत्तर: (C) कथन III सही है।

हल:

अवधारणा:

- चरित्र संबंधी कथनों की जाँच पाठ में वर्णित योग्यता और व्यवहार से करनी चाहिए।
- विकल्प का चयन पाठ के विशिष्ट प्रसंग से करें, केवल सामान्य अर्थ या अनुमान से नहीं।

चरण 1: पाठ का प्रसंग पहचानें वसंत पाटील पढ़ने में होशियार और शांत स्वभाव का छात्र था। वह कक्षा का मॉनीटर था। आनंदा उसकी लगन और पढ़ने की आदत से प्रभावित हुआ तथा उसके साथ रहने से उसकी पढ़ाई में सुधार आया।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें इसलिए कमजोर विद्यार्थी बताने वाला कथन I तथा आनंदा का शत्रु बताने वाला कथन II गलत हैं। पाठ का यह प्रसंग बारहवीं कक्षा का नहीं है, इसलिए कथन IV भी गलत है। कथन III ही पाठ के चरित्र-वर्णन से पुष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष केवल कथन III सही है। अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: वसंत पाटील को होशियार मॉनीटर और आनंदा के सहयोगी सहपाठी के रूप में याद रखें।

3(ix). 'सिल्वर वैडिंग' कहानी में प्रयुक्त 'असीक का फूल' से क्या तात्पर्य है ? [1 अंक]

(A) स्वागत के फूल

(B) आशीर्वाद के फूल

(C) माला बनाने के फूल

(D) पूजा के फूल

सही उत्तर: (B) आशीर्वाद के फूल

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में प्रयुक्त स्थानीय शब्द का अर्थ उसके भाव और प्रयोग से समझा जाता है।
- विकल्प का चयन पाठ के विशिष्ट प्रसंग से करें, केवल सामान्य अर्थ या अनुमान से नहीं।

चरण 1: पाठ का प्रसंग पहचानें 'असीक' का आशय आशीष अथवा आशीर्वाद है। इसलिए कहानी में 'असीक का फूल' बड़ों की शुभकामना और आशीर्वाद की भावना व्यक्त करता है। यहाँ फूल का महत्व उसके भावात्मक अर्थ से है।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें स्वागत के फूल किसी के आगमन के सम्मान से जुड़े हैं। माला बनाने और पूजा के फूल उनके उपयोग बताते हैं। इनमें से कोई भी असीक शब्द के आशीर्वाद वाले अर्थ को व्यक्त नहीं करता। इसलिए इन तीनों विकल्पों को छोड़ना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष असीक का फूल अर्थात आशीर्वाद के फूल। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: असीक शब्द को आशीष से जोड़कर उसका भावार्थ पहचानें; फूल के सामान्य उपयोगों से न उलझें।

3(v). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : सिंधु सभ्यता को जल-संस्कृति कहा जाता है।

कारण : सिंधु घाटी सभ्यता पहली ज्ञात संस्कृति है जिसमें लगभग सात सौ कुएँ, नदी, स्नानागार और बेजोड़ जल निकासी की व्यवस्था है।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन और कारण की सत्यता के साथ दोनों के बीच व्याख्यात्मक संबंध भी जाँचना आवश्यक है।
- जल-प्रबंध की विकसित व्यवस्था सिंधु सभ्यता की विशिष्ट पहचान है।

चरण 1: कथन की जाँच करें सिंधु सभ्यता के जीवन में जल और उससे जुड़ी व्यवस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान था। इसलिए उसे जल-संस्कृति कहना सही है।

चरण 2: कारण की जाँच करें पाठ में लगभग सात सौ कुओं, नदी, स्नानागार और बेजोड़ जल-निकासी का उल्लेख है। ये विकसित जल-व्यवस्थाएँ कारण में दिए विवरण की पुष्टि करती हैं। अतः कारण भी सही है।

चरण 3: व्याख्यात्मक संबंध पहचानें जल की उपलब्धता, सामुदायिक स्नान और निकासी की ऐसी सुव्यवस्थित सुविधाओं के कारण ही यह सभ्यता जल-संस्कृति कहलाती है। कारण सीधे कथन का आधार स्पष्ट करता है। इसलिए (A) और (B) सत्यता के स्तर पर तथा (C) संबंध के स्तर पर गलत हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन तथा कारण दोनों सही हैं और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों वाक्य अलग जाँचें, फिर देखें कि जल-प्रबंध के प्रमाण जल-संस्कृति नाम का कारण बताते हैं।

3(vi). सिंधु घाटी सभ्यता का स्वरूप था : [1 अंक]

(A) जंगली

(B) नगरीय

(C) ग्रामीण

(D) कबीलाई

सही उत्तर: (B) नगरीय

हल:

अवधारणा:

- सभ्यता का स्वरूप उसकी बस्ती, निर्माण तथा सार्वजनिक सुविधाओं से पहचाना जाता है।
- विकल्प का चयन पाठ के विशिष्ट प्रसंग से करें, केवल सामान्य अर्थ या अनुमान से नहीं।

चरण 1: पाठ का प्रसंग पहचानें सिंधु घाटी सभ्यता के नगरों में नियोजित सड़कें, व्यवस्थित मकान, कुएँ, स्नानागार और जल-निकासी की व्यवस्था मिलती है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे केंद्र सुनियोजित नगर-जीवन के प्रमाण हैं।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें इन संगठित सार्वजनिक व्यवस्थाओं के कारण इसे नगरीय सभ्यता कहा जाता है। जंगली तथा कबीलाई विकल्प विकसित नगर-नियोजन की उपेक्षा करते हैं। ग्रामीण विकल्प भी इसके प्रमुख नगर-केंद्रित स्वरूप को सही ढंग से व्यक्त नहीं करता।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु घाटी सभ्यता का स्वरूप नगरीय था। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: पक्की सड़कें, नालियाँ और सार्वजनिक स्नानागार दिखें तो सिंधु सभ्यता का नगरीय स्वरूप पहचानें।

3(vii). वर्तमान में सिंध की खास पहचान क्या बन गया ? [1 अंक]

(A) दाढ़ी वाले 'नरेश' की मूर्ति

(B) गुलकारी वाला दुपट्टा

(C) छापे वाला कपड़ा 'अजरक'

(D) बारीक बुनाई वाला सूती कपड़ा

सही उत्तर: (C) छापे वाला कपड़ा 'अजरक'

हल:

अवधारणा:

- अतीत की कलात्मक परंपरा और वर्तमान की पहचान के बीच पाठ में बताए गए संबंध को पहचानना है।
- विकल्प का चयन पाठ के विशिष्ट प्रसंग से करें, केवल सामान्य अर्थ या अनुमान से नहीं।

चरण 1: पाठ का प्रसंग पहचानें पाठ में छापे वाले कपड़े 'अजरक' को वर्तमान सिंध की खास पहचान बताया गया है। यह वस्त्र-परंपरा सिंध के कला-बोध और सांस्कृतिक जीवन से जुड़ी हुई है। प्रश्न वर्तमान पहचान पूछता है, इसलिए इसी उल्लेख पर ध्यान देना चाहिए।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें दाढ़ी वाले नरेश की मूर्ति पुरातात्त्विक कला का उदाहरण है। गुलकारी वाला दुपट्टा और बारीक बुनाई वाला सूती कपड़ा भी वस्त्रों के रूप बताते हैं, लेकिन प्रश्न में अपेक्षित वर्तमान विशिष्ट पहचान के रूप में अजरक का उल्लेख है।

चरण 3: निष्कर्ष वर्तमान में सिंध की खास पहचान छापे वाला कपड़ा 'अजरक' बन गया है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: वर्तमान सिंध की पहचान पूछने पर अजरक याद करें; पुरातात्त्विक मूर्ति को उसका स्थान न दें।

3(viii). पत्थर की शिला पर लिखी कविता 'जूझ' कहानी के लेखक के द्वारा कब मिटाई जाती थी ? [1 अंक]

(A) मास्टर को दिखा देने के बाद

(B) याद हो जाने के बाद

(C) मित्रों को दिखा देने के बाद

(D) मास्टर को सुना देने के बाद

सही उत्तर: (B) याद हो जाने के बाद

हल:

अवधारणा:

- लेखक की कविता रचने, सँवारने और याद रखने की प्रक्रिया इस प्रश्न का आधार है।
- विकल्प का चयन पाठ के विशिष्ट प्रसंग से करें, केवल सामान्य अर्थ या अनुमान से नहीं।

चरण 1: पाठ का प्रसंग पहचानें आनंदा काम के बीच अपनी अनुभूतियों को कविता का रूप देता था। वह पत्थर की शिला पर कविता लिखता, उसे पढ़ता और मन में बैठाता था। इस प्रकार शिला लिखने और अभ्यास करने का साधन बनती थी।

चरण 2: विकल्पों की जाँच करें जब कविता उसे याद हो जाती, तब वह शिला पर लिखी कविता मिटा देता था। मिटाने का संबंध कंठस्थ कर लेने से था। मास्टर को दिखाने, मित्रों को दिखाने या मास्टर को सुनाने को मिटाने की शर्त बताने वाले विकल्प इस प्रसंग से मेल नहीं खाते।

चरण 3: निष्कर्ष कविता याद हो जाने के बाद मिटाई जाती थी। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: शिला पर लिखना अभ्यास था; मिटाने का समय कविता याद होने से जोड़कर पहचानें।

3(x). 'जब तक बाप है तब तक मौज कर ले।' यशोधर बाबू यह बात अपने बच्चों से कहते हैं : [1 अंक]

(A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

(B) उनका उत्साहवर्धन करने के लिए

(C) जिम्मेदारियों से मुक्त रखने के लिए

(D) उनके प्रति अपना प्रेम व्यक्त करने के लिए

सही उत्तर: (A) उन पर व्यंग्य करने के लिए

हल:

अवधारणा:

- कथन का आशय उसके प्रसंग और बोलने के लहजे से पहचाना जाता है।
- तंज़िया कहने का अर्थ व्यंग्यपूर्ण ढंग से कहना है।

चरण 1: कथन का प्रसंग समझें यशोधर बाबू के पिता का निधन उनके विद्यार्थी जीवन में हो गया था। जिम्मेदारी जल्दी आ जाने से वे जल्दी जिम्मेदार बन गए। अपने बच्चों को देखकर वे सोचते हैं कि जिम्मेदारी सिर पर आने पर वे भी अपने आप सँभल जाएँगे।

चरण 2: लहजे और विकल्पों की जाँच करें इसी प्रसंग में वे बच्चों से यह बात तंज़िया कहते हैं। इसलिए इसमें बच्चों के अभी तक निश्चिंत रहने पर व्यंग्य है। यह किसी काम के लिए उत्साह बढ़ाना नहीं है। न ही इसका उद्देश्य उन्हें दायित्व से मुक्त रखना या सीधे स्नेह व्यक्त करना है। पाठ में बताया गया व्यंग्यपूर्ण लहजा अन्य विकल्पों को अस्वीकार करता है।

चरण 3: निष्कर्ष यशोधर बाबू यह बात अपने बच्चों पर व्यंग्य करने के लिए कहते हैं। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पाठ का तंज़िया शब्द याद रखें; कथन का लहजा पहचानने से व्यंग्य वाला विकल्प स्पष्ट हो जाता है।

---

4. झूमने लगे फल,
रस अलौकिक
अमृत धाराएँ फूटतीं
रोपाई क्षण की,
कटाई अनंतता की
लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती।
रस का अक्षय पात्र सदा का
छोटा मेरा खेत चौकोना। [5 अंक]

4(i). कवि-कर्म की दृष्टि से 'झूमने लगे फल' का आशय है : [1 अंक]

(A) कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना

(B) साहित्य का आनंद आना

(C) खेतों में फ़सल लहलहाना

(D) हृदय का प्रसन्नता से झूमना

सही उत्तर: (A) कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना

हल:

अवधारणा:

- कविता में खेत और फसल के माध्यम से काव्य-सृजन को समझाया गया है। फल का आना रचनात्मक प्रक्रिया के परिणाम को व्यक्त करता है।

- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: पाठगत संकेत और आशय 'झूमने लगे फल' में फल तैयार रचना के प्रतीक हैं। कवि-कर्म की दृष्टि से यह वह अवस्था है जब भावों और कल्पना से विकसित कृति अपना पूर्ण रूप ग्रहण करती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) साहित्य के आस्वादन से संबंधित है, जबकि यहाँ रचना के तैयार होने का संकेत है। (C) केवल खेती का शाब्दिक अर्थ लेता है। (D) सामान्य प्रसन्नता बताता है और कवि-कर्म के रूपक का पूरा आशय नहीं देता।

चरण 3: निष्कर्ष कृति का पूर्ण रूप ग्रहण करना अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: कवि-कर्म पूछा जाए तो फल को तैयार कृति से जोड़ें; खेत में फसल का शाब्दिक अर्थ न लें।

4(ii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए पद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए : [1 अंक]

(A) कविता का आनंद शाश्वत है।

(B) कविता का आनंद क्षणिक है।

(C) कविता का आनंद सीमित है।

(D) कविता का आनंद अल्पकाल तक है।

सही उत्तर: (A) कविता का आनंद शाश्वत है।

हल:

अवधारणा:

- कविता के रस की अवधि का निर्धारण पद्यांश में आए समय-संबंधी संकेतों से होता है। अक्षय का अर्थ है जिसका क्षय न हो।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: पाठगत संकेत और आशय 'कटाई अनंतता की' और 'रस का अक्षय पात्र सदा का' बताते हैं कि रचना से मिलने वाला आनंद समय बीतने पर समाप्त नहीं होता। उसे बार-बार पढ़कर और दूसरों तक पहुँचाकर प्राप्त किया जा सकता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) का क्षणिक, (C) का सीमित और (D) का अल्पकाल तक रहने वाला आनंद पद्यांश के अनंत, अक्षय और सदा जैसे संकेतों के विपरीत हैं। अतः इन तीनों कथनों को स्वीकार नहीं किया जा सकता।

चरण 3: निष्कर्ष कविता का आनंद शाश्वत है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: अनंतता, अक्षय और सदा तीनों शब्द समय की सीमा मिटाते हैं; इसलिए शाश्वत वाला विकल्प चुनें।

4(iii). काव्यांश में 'अलौकिक' से तात्पर्य है : [1 अंक]

(A) लौकिक

(B) अद्भुत

(C) अल्पज्ञ

(D) आस्था

सही उत्तर: (B) अद्भुत

हल:

अवधारणा:

- शब्दार्थ चुनते समय शब्द के सामान्य अर्थ के साथ काव्यांश का प्रसंग भी देखना चाहिए। यहाँ रस के असाधारण अनुभव का वर्णन है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: पाठगत संकेत और आशय 'रस अलौकिक' के तुरंत बाद 'अमृत धाराएँ फूटतीं' कहा गया है। इससे ऐसे असाधारण और विलक्षण काव्यानंद का बोध होता है जो सामान्य अनुभव से ऊपर उठाता है। दिए गए विकल्पों में इसका अर्थ अद्भुत है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) लौकिक सामान्य संसार से संबंधित होने का अर्थ देता है और अलौकिक के विपरीत है। (C) अल्पज्ञ का अर्थ कम जानने वाला है। (D) आस्था विश्वास को कहते हैं। ये दोनों भी रस की विलक्षणता का अर्थ नहीं बताते।

चरण 3: निष्कर्ष अद्भुत अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: अलौकिक रस के साथ अमृत धाराओं का संकेत देखें; यहाँ अद्भुत अनुभव है, आस्था या अल्पज्ञान नहीं।

4(iv). निम्नलिखित कथन और कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

कथन : काव्यानंद जितना ही बँटता है उतना ही बढ़ता जाता है।

कारण : साहित्य-सृजन प्राणिमात्र के मंगल के लिए है, काव्यानंद का वितरण लोक के आनंद का संवर्धन है।

विकल्प : [1 अंक]

(A) कथन सही है, कारण ग़लत है।

(B) कथन सही नहीं है, कारण सही है।

(C) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।

(D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

सही उत्तर: (D) कथन तथा कारण दोनों सही हैं, किंतु कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।

हल:

अवधारणा:

- कथन-कारण प्रश्न में दोनों कथनों की सत्यता तथा उनके बीच के व्याख्यात्मक संबंध को अलग-अलग परखना चाहिए।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: कथन की सत्यता 'लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती' तथा 'रस का अक्षय पात्र' बताते हैं कि काव्यानंद बाँटने पर समाप्त नहीं होता। अधिक पाठकों तक पहुँचने से उसका अनुभव और प्रभाव फैलता है। इसलिए कथन सही है।

चरण 2: कारण की सत्यता कारण में काव्यानंद के वितरण को लोक के आनंद का संवर्धन कहा गया है। साहित्य से अनेक पाठकों को आनंद मिलता है और उनकी संवेदना समृद्ध होती है। अतः कारण भी सही है।

चरण 3: कारण और कथन का संबंध साहित्य का आनंद लोगों तक पहुँचता है तो उनके भाव-जगत को समृद्ध करता है। इसीलिए उसका वितरण लोक के आनंद में वृद्धि करता है; कारण सही है। यही वृद्धि कथन के बढ़ते काव्यानंद को समझाती है। (A) और (B) किसी एक

को गलत बताते हैं तथा (C) व्याख्यात्मक संबंध नकारता है; तीनों अनुपयुक्त हैं।

चरण 4: निष्कर्ष कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: पहले दोनों कथन सही परखें; फिर लोक के आनंद में वृद्धि को बाँटने पर बढ़ते काव्यानंद से जोड़ें।

4(v). 'रस का अक्षय पात्र' किसे कहा गया है ? [1 अंक]

(A) कवि हृदय को

(B) कविता पढ़ने से मिले आनंद को

(C) साहित्य को

(D) चौकोने छोटे खेत को

सही उत्तर: (C) साहित्य को

हल:

अवधारणा:

- कविता में खेत और उसकी फसल का रूपक साहित्य-सृजन तथा उससे मिलने वाले रस के लिए प्रयुक्त हुआ है। पात्र उस स्रोत को कहते हैं जिसमें रस संचित रहता है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: पाठगत संकेत और आशय 'रस का अक्षय पात्र सदा का' उस साहित्य को कहा गया है जिससे पाठक निरंतर आनंद प्राप्त करते हैं। 'लुटते रहने से जरा भी नहीं कम होती' से स्पष्ट है कि बार-बार आस्वादन करने पर भी साहित्य का रस समाप्त नहीं होता।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) कवि हृदय सृजन की संवेदना का आधार है, पर यहाँ तैयार साहित्य के रस की अक्षयता कही गई है। (B) पाठक को मिलने वाला आनंद प्रभाव है, उसका पात्र नहीं। (D) खेत का शाब्दिक अर्थ लेता है और साहित्यिक रूपक का आशय छोड़ देता है।

चरण 3: निष्कर्ष साहित्य को अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: पात्र आनंद का स्रोत है; रस प्राप्त करने वाला पाठक और रस देने वाला साहित्य अलग करके विकल्प चुनें।

---

5. जाड़े का दिन। अमावस्या की रात – ठंडी और काली। मलेरिया और हैज़े से पीड़ित गाँव भयार्त्त शिशु की तरह थर-थर काँप रहा था। पुरानी और उजड़ी बाँस-फूस की झोपड़ियों में अंधकार और सन्नाटे का सम्मिलित साम्राज्य ! अँधेरा और निस्तब्धता !

अँधेरी रात चुपचाप आँसू बहा रही थी। निस्तब्धता करुण सिसकियों और आहों को बलपूर्वक अपने हृदय में ही दबाने की चेष्टा कर रही थी। आकाश में तारे चमक रहे थे। पृथ्वी पर कहीं प्रकाश का नाम नहीं। आकाश से टूटकर यदि कोई भावुक तारा पृथ्वी पर जाना भी चाहता तो उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी। अन्य तारे उसकी भावुकता अथवा असफलता पर खिलखिलाकर हँस पड़ते थे। [5 अंक]

5(i). गद्यांश में प्रयुक्त 'भयार्त्त' शब्द का अर्थ है : [1 अंक]

(A) भीषण

(B) भय से पीड़ित

(C) भयंकर

(D) भयानक

सही उत्तर: (B) भय से पीड़ित

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में प्रयुक्त शब्द का अर्थ उसके गठन और वाक्य के प्रसंग दोनों से स्पष्ट होता है। भयार्त्त में भय तथा आर्त अर्थात पीड़ित का भाव है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: पाठगत संकेत और आशय गाँव को 'भयार्त्त शिशु की तरह थर-थर' काँपता बताया गया है। महामारी से ग्रस्त लोगों का भय और असहायपन इस तुलना का आधार है। इसलिए शब्द का अर्थ भय से पीड़ित है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) भीषण, (C) भयंकर तथा (D) भयानक किसी वस्तु या स्थिति के डरावना होने का भाव देते हैं। भयार्त्त उस व्यक्ति या समुदाय की अवस्था बताता है जो स्वयं डर के कारण पीड़ित है; इसलिए ये विकल्प सही नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष भय से पीड़ित अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: भयार्त्त में आर्त का अर्थ पीड़ित याद रखें; डरावना और डर से पीड़ित होने का अंतर स्पष्ट हो जाएगा।

5(ii). गद्यांश का केन्द्रीय भाव है : [1 अंक]

(A) गाँव की प्रकृति का चित्रण

(B) गाँव की रात्रि का चित्रण

(C) भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण

(D) गाँव में व्याप्त नीरवता का चित्रण

सही उत्तर: (C) भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण

हल:

अवधारणा:

- केंद्रीय भाव पूरे गद्यांश के प्रमुख आशय को समेटता है। परिवेश के किसी एक विवरण को ही केंद्रीय भाव नहीं मानना चाहिए।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: पाठगत संकेत और आशय मलेरिया और हैजे से पीड़ित गाँव, उजड़ी झोपड़ियाँ, करुण सिसकियाँ और आहें मिलकर गाँव की दयनीय स्थिति दिखाते हैं। अँधेरी रात और बुझती ज्योति इसी त्रासद वातावरण को अधिक प्रभावी बनाती हैं।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (C) इस सामूहिक विपदा का सबसे व्यापक चित्र प्रस्तुत करता है। (A) प्रकृति और (B) रात को ही

केंद्र बनाते हैं। (D) केवल नीरवता तक सीमित है। ये तीनों विवरण प्रसंग में हैं, किंतु पूरे अंश की पीड़ा को नहीं समेटते।

चरण 3: निष्कर्ष भूख और महामारी से दम तोड़ रहे गाँव की दयनीय दशा का चित्रण अतः सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: महामारी, उजड़ी झोपड़ियाँ और करुण आहें साथ पढ़ें; रात और सन्नाटा पूरी त्रासदी के केवल अंग हैं।

5(iii). निम्नलिखित कथनों पर विचार करते हुए गद्यांश के अनुसार सही कथन को चयनित कर लिखिए : [1 अंक]

(A) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती में आशा-किरण का आश्रय व्यर्थ प्रयास है।

(B) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती आशा-निराशा के भाव में झूल रही है।

(C) महामारी और आर्थिक तंगी से जूझती ग्राम-बस्ती में ग्रामीण एक दूसरे की सहायता कर रहे हैं।

(D) महामारी और आर्थिक तंगी से जूझती ग्राम-बस्ती अपनी स्थिति से संतुष्ट है।

सही उत्तर: (A) महामारी और आर्थिक तंगी की त्रासदी से जूझती ग्राम-बस्ती में आशा-किरण का आश्रय व्यर्थ प्रयास है।

हल:

अवधारणा:

- प्रतीकात्मक कथन का आशय उसके परिणाम से समझना चाहिए। गद्यांश में तारे की पृथ्वी तक पहुँचने की कोशिश का अंत निर्णायक संकेत है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: पाठगत संकेत और आशय भावुक तारा पृथ्वी पर जाना चाहता है, पर 'उसकी ज्योति और शक्ति रास्ते में ही शेष हो जाती थी'। आशा की किरण पीड़ित बस्ती तक पहुँच नहीं पाती। इसलिए अंश के निराशाजनक वातावरण में आशा का सहारा लेने का प्रयास व्यर्थ दिखाई देता है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (B) आशा और निराशा के बीच झूलने की बात करता है, जबकि यहाँ आशा की कोशिश असफल होती दिखाई गई है। (C) में परस्पर सहायता और (D) में संतोष बताया गया है; अंश में न सहायता का ऐसा प्रसंग है, न संतुष्टि का। अतः (A) ही उपयुक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष महामारी और आर्थिक तंगी से जूझती बस्ती में आशा-किरण का आश्रय व्यर्थ प्रयास है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: तारे की कोशिश से अधिक उसका परिणाम देखें; ज्योति रास्ते में चुकना आशा-किरण के असफल होने का संकेत है।

5(iv). प्रकृति को आँसू बहाते हुए क्यों दिखाया गया है ? [1 अंक]

(A) काव्यात्मक रूप में प्रकृति सौंदर्य व्यक्त करने हेतु

(B) गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु

(C) गाँव में व्याप्त सन्नाटे और अंधकार का वर्णन करने हेतु

(D) प्रकृति की विवशता और असमर्थता को प्रकट करने हेतु

सही उत्तर: (B) गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु

हल:

अवधारणा:

- मानवीकरण में प्रकृति को मनुष्य की अनुभूतियाँ दी जाती हैं। यहाँ रात का आँसू बहाना ग्रामीणों की पीड़ा के साथ सहानुभूति का चित्र है।
- उत्तर का आधार दिए गए अंश के शब्द और उनका प्रसंगानुसार आशय है।

चरण 1: पाठगत संकेत और आशय अँधेरी रात को 'चुपचाप आँसू' बहाते और निस्तब्धता को करुण सिसकियाँ दबाते बताया गया है। ये मानवीय क्रियाएँ प्रकृति को दुखी ग्रामीणों का सहभागी बनाती हैं। इससे गाँव की करुण स्थिति और अधिक मार्मिक होती है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की जाँच (A) प्रकृति-सौंदर्य पर बल देता है, जबकि यहाँ दुख प्रमुख है। (C) सन्नाटे और अंधकार का बाहरी वर्णन भर है, आँसू की भावात्मक भूमिका नहीं। (D) विवशता पर केंद्रित है; प्रश्न में आँसू बहाने का सीधा उद्देश्य दुख में सहभागिता दिखाना है।

चरण 3: निष्कर्ष गाँव वालों के दुख में प्रकृति को दुखी दिखाने हेतु अतः सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: रात के आँसू को ग्रामीणों की करुण सिसकियों से जोड़ें; यही प्रकृति की दुख में सहभागिता बताता है।

5(v). स्तंभ-I को स्तंभ-II से सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए :

	स्तंभ-I		स्तंभ-II
1.	अमावस्या की रात – ठंडी और काली	(i)	आशा एवं जिजीविषा का अभाव
2.	प्रकाश का नाम नहीं	(ii)	पीड़ित गाँव वालों की मदद न कर पाना
3.	तारे की शक्ति और ज्योति रास्ते में ही शेष हो जाती	(iii)	निराशापूर्ण परिवेश

विकल्प : [1 अंक]

(A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

(B) 1-(i), 2-(ii), 3-(iii)

(C) 1-(ii), 2-(iii), 3-(i)

(D) 1-(iii), 2-(ii), 3-(i)

सही उत्तर: (A) 1-(iii), 2-(i), 3-(ii)

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में अंधकार, प्रकाश और तारे का प्रयोग गाँव की पीड़ा तथा निराशा को व्यक्त करने के लिए हुआ है।
- विकल्प का निर्णय प्रश्न के मुख्य संकेत तथा अन्य विकल्पों की उपयुक्तता की जाँच से किया जाता है।

चरण 1: पहले दो कथनों का अर्थ अमावस्या की ठंडी और काली रात निराशापूर्ण परिवेश का बिंब है, इसलिए 1 का संबंध (iii) से है। प्रकाश का नाम भी न होना आशा एवं जिजीविषा के अभाव का संकेत है, इसलिए 2 का संबंध (i) से है।

चरण 2: तीसरे कथन और विकल्पों की जाँच तारे की ज्योति और शक्ति रास्ते में समाप्त हो जाना पीड़ित गाँव वालों तक सहायता न पहुँच पाने का संकेत है। इसलिए 3 का संबंध (ii) से है। (B) में तीनों संबंध बदल गए हैं; (C) में भी कोई संबंध उचित नहीं है। (D) में पहला संबंध सही, पर दूसरे और तीसरे संबंध उलट गए हैं।

चरण 3: निष्कर्ष सही सुमेलन 1-(iii), 2-(i), 3-(ii) है। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: सुमेलन में पहले सबसे स्पष्ट बिंब का अर्थ चुनें; यहाँ काली रात सीधे निराशापूर्ण परिवेश का संकेत देती है।

6(i). समाचार माध्यमों में किसी समाचार को प्रकाशन हेतु स्वीकार करने की निश्चित समय-सीमा को कहा जाता है : [1 अंक]

(A) ऑन लाइन

(B) ऑफ लाइन

(C) डेड लाइन

(D) डेथ लाइन

सही उत्तर: (C) डेड लाइन

हल:

अवधारणा:

- समाचार के प्रकाशन का क्रम समयबद्ध होता है; सामग्री स्वीकार करने का अंतिम समय निश्चित रहता है।
- विकल्प का निर्णय प्रश्न के मुख्य संकेत तथा अन्य विकल्पों की उपयुक्तता की जाँच से किया जाता है।

चरण 1: निर्धारित समय-सीमा पहचानना समाचार या अन्य सामग्री को किसी अंक अथवा प्रसारण में शामिल करने के लिए स्वीकार करने की अंतिम समय-सीमा डेड लाइन कहलाती है। प्रश्न का संकेत सामग्री स्वीकार किए जाने के निश्चित अंतिम समय पर है।

चरण 2: अन्य विकल्पों का परीक्षण ऑन लाइन का संबंध इंटरनेट अथवा नेटवर्क से जुड़े होने से है और ऑफ लाइन का संबंध उससे अलग होने से है। ये प्रकाशन के लिए अंतिम समय नहीं बताते। डेथ लाइन यहाँ प्रयुक्त पत्रकारिता का पारिभाषिक शब्द नहीं है; सही पद डेड लाइन है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार को प्रकाशन हेतु स्वीकार करने की निश्चित समय-सीमा डेड लाइन कहलाती है। सही विकल्प (C) है।

त्वरित सुझाव: समय-सीमा या अंतिम समय पूछे जाने पर डेड लाइन पहचानें; ऑन लाइन और ऑफ लाइन को इंटरनेट की स्थिति से जोड़ें।

6(ii). एच टी एम एल क्या है ? [1 अंक]

(A) वेबसाइट

(B) वेबसीरीज़

(C) वेबफ़िल्म

(D) वेबभाषा

सही उत्तर: (D) वेबभाषा

हल:

अवधारणा:

- वेब पर प्रस्तुत सामग्री की संरचना बनाने के लिए एक विशेष चिह्नांकन भाषा का प्रयोग होता है।
- विकल्प का निर्णय प्रश्न के मुख्य संकेत तथा अन्य विकल्पों की उपयुक्तता की जाँच से किया जाता है।

चरण 1: एच टी एम एल का परिचय एच टी एम एल का पूरा नाम हाइपर टेक्स्ट मार्कअप लैंग्वेज है। इसके चिह्नों द्वारा वेब पृष्ठ में शीर्षक, अनुच्छेद, लिंक और अन्य सामग्री की संरचना निर्धारित की जाती है। इसलिए दिए गए विकल्पों में इसे वेबभाषा कहा गया है।

चरण 2: बाकी विकल्पों से अंतर वेबसाइट संबंधित वेब पृष्ठों का समूह है, भाषा का नाम नहीं। वेबसीरीज़ और वेबफ़िल्म इंटरनेट पर उपलब्ध दृश्य-श्रव्य रचनाएँ हैं। एच टी एम एल ऐसी रचना नहीं, बल्कि वेब पृष्ठ बनाने की चिह्नांकन भाषा है। अतः (A), (B) और (C) उपयुक्त नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष एच टी एम एल वेबभाषा है। अतः सही विकल्प (D) है।

त्वरित सुझाव: एच टी एम एल में लैंग्वेज शब्द को याद रखें; वेबसाइट उससे बनी सामग्री है, जबकि भाषा उसे संरचना देती है।

6(iii). 'अख़बार की आवाज़' किसे माना जाता है ? [1 अंक]

(A) पहले पृष्ठ पर छपे मुख्य समाचार को

(B) संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को

(C) अर्थव्यवस्था से जुड़ी ख़बरों को

(D) अंतिम पृष्ठ पर छपे विदेशी समाचारों को

सही उत्तर: (B) संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी प्रमुख विषय पर समाचारपत्र की वैचारिक राय और नीति को व्यक्त करता है।
- विकल्प का निर्णय प्रश्न के मुख्य संकेत तथा अन्य विकल्पों की उपयुक्तता की जाँच से किया जाता है।

चरण 1: अख़बार की आवाज़ का आशय अख़बार की आवाज़ से तात्पर्य उसके संस्थागत विचार और दृष्टिकोण से है। संपादकीय पृष्ठ पर लिखा गया संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण मुद्दे का विश्लेषण करते हुए उसी दृष्टिकोण को सामने रखता है। इसलिए उसे अख़बार की आवाज़ माना जाता है।

चरण 2: समाचार और संपादकीय में अंतर पहले पृष्ठ का मुख्य समाचार घटना की प्रमुख जानकारी देता है। अर्थव्यवस्था की ख़बरें और विदेशी समाचार अपने विषयों से संबंधित सूचनाएँ देते हैं। केवल स्थान या विषय के कारण वे अख़बार की वैचारिक आवाज़ नहीं बन जाते। इसलिए (A), (C) और (D) सही नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष संपादकीय पृष्ठ पर लिखे गए संपादकीय को अख़बार की आवाज़ माना जाता है। सही विकल्प (B) है।

त्वरित सुझाव: अख़बार की राय, नीति या दृष्टिकोण पूछा जाए तो संपादकीय चुनें; समाचार का मुख्य काम घटनाओं की सूचना देना है।

6(iv). पत्रकार द्वारा साक्षात्कार लिए जाने का उद्देश्य है : [1 अंक]

(A) समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना

(B) साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति को प्रसिद्धि दिलाना

(C) पत्रकार द्वारा अपनी विशेष योग्यता दर्शाना

(D) पत्रकार द्वारा अपनी जिज्ञासा पूरी करना

सही उत्तर: (A) समाचार, फ़ीचर, विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना

हल:

अवधारणा:

- साक्षात्कार प्रश्नोत्तर के माध्यम से किसी जानकार या संबंधित व्यक्ति से तथ्य, अनुभव और विचार प्राप्त करने की विधि है।
- विकल्प का निर्णय प्रश्न के मुख्य संकेत तथा अन्य विकल्पों की उपयुक्तता की जाँच से किया जाता है।

चरण 1: साक्षात्कार का मुख्य प्रयोजन पत्रकार किसी घटना, विषय या व्यक्ति के बारे में विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करने के लिए साक्षात्कार लेता है। उससे मिली सामग्री का उपयोग समाचार, फ़ीचर और विशेष रिपोर्ट तैयार करने में किया जाता है। इसलिए सामग्री-संग्रह इसका प्रमुख पत्रकारीय उद्देश्य है।

चरण 2: वैकल्पिक उद्देश्यों की जाँच साक्षात्कार से व्यक्ति को प्रसिद्धि मिल सकती है, पर उसे प्रसिद्ध करना मुख्य उद्देश्य नहीं है। पत्रकार की योग्यता दिखाना भी इसका प्रयोजन नहीं है। निजी जिज्ञासा पूरी करना सार्वजनिक हित में तथ्य और विचार जुटाने के व्यापक पत्रकारीय उद्देश्य का स्थान नहीं ले सकता। इसलिए (B), (C), (D) अनुचित हैं।

चरण 3: निष्कर्ष साक्षात्कार का उद्देश्य समाचार, फ़ीचर और विशेष रिपोर्ट के लिए सामग्री एकत्रित करना है। सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: पत्रकारिता की किसी विधि का उद्देश्य चुनते समय व्यक्तिगत लाभ के बजाय पाठकों के लिए तथ्य और सामग्री जुटाने पर ध्यान दें।

6(v). टेलीविज़न के लिए समाचार या आलेख लेखन के लिए अनिवार्य है : [1 अंक]

(A) शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों

(B) समाचार की भाषा आंचलिक शब्दावली से युक्त हो

(C) समाचारों के बीच-बीच में दृश्य अवश्य उपस्थित हों

(D) बाइट, ग्राफिक के माध्यम से समाचारों की प्रस्तुति हो

सही उत्तर: (A) शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल हों

हल:

अवधारणा:

- टेलीविज़न दृश्य-श्रव्य माध्यम है; उसके लिए लिखे गए शब्दों का परदे पर दिखाई देने वाले दृश्यों से मेल होना चाहिए।
- विकल्प का निर्णय प्रश्न के मुख्य संकेत तथा अन्य विकल्पों की उपयुक्तता की जाँच से किया जाता है।

चरण 1: अनिवार्य लेखन-विशेषता टेलीविज़न के दर्शक दृश्य देखने के साथ समाचार सुनते हैं। शब्द दृश्य के अनुकूल हों तो दोनों मिलकर स्पष्ट अर्थ देते हैं। दृश्य और कथन में विरोध होने पर दर्शक भ्रमित हो सकता है। इसलिए लेखन की अनिवार्य शर्त शब्द और दृश्य का सामंजस्य है।

चरण 2: अन्य विकल्पों की सीमा आंचलिक शब्दावली का प्रयोग हर समाचार के लिए आवश्यक नहीं; भाषा सहज और समझने योग्य होनी चाहिए। बीच-बीच में दृश्य होना या बाइट और ग्राफिक का प्रयोग प्रस्तुति के उपाय हैं। वे हर आलेख की अनिवार्य लेखन-शर्त नहीं हैं और शब्द-दृश्य के मेल का स्थान नहीं लेते। इसलिए (B), (C), (D) सही नहीं हैं।

चरण 3: निष्कर्ष शब्द परदे पर दिखने वाले दृश्य के अनुकूल होने चाहिए। अतः सही विकल्प (A) है।

त्वरित सुझाव: टेलीविज़न संबंधी प्रश्न में दृश्य और सुनाई पड़ने वाले कथन को साथ सोचें; दोनों का एक ही अर्थ व्यक्त करना आवश्यक है।

7(क). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा स्पष्ट दृष्टिकोण, कल्पनाशील आरंभ और क्रमबद्ध विचार अपेक्षित हैं। स्वच्छता और स्वास्थ्य के संबंध को दैनिक जीवन के ठोस उदाहरणों से स्पष्ट करना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों की सीमा में शीर्षक, प्रभावी आरंभ, विषय-विस्तार और सार्थक समापन रखें। भाषा सहज और अपनी हो; केवल नारों का संकलन करने से बचें।

चरण 1: लेख का रूप और विचार-योजना शीर्षक में मूल विषय रखें। आरंभ किसी परिचित दृश्य से करें, जैसे स्वच्छ गली या कचरे से भरा रास्ता। आगे दूषित पानी, गंदगी और बीमारियों का संबंध बताएँ। फिर सूखे-गीले कचरे को अलग करने, शौचालय अपनाने और सार्वजनिक स्थानों की सफाई जैसे उपाय रखें। अंत में व्यक्तिगत जिम्मेदारी को सामूहिक स्वास्थ्य से जोड़ें। इस प्रकार लेख में समस्या, समाधान और संकल्प का स्वाभाविक क्रम बनेगा।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **स्वच्छ भारत : स्वस्थ भारत**

सुबह की धूप में चमकती साफ गली मन को प्रसन्न कर देती है। वहीं सड़क पर पड़ा कचरा सुंदरता के साथ स्वास्थ्य भी छीन लेता है। गंदे पानी में पनपते मच्छर और भोजन पर बैठती मक्खियाँ बीमारियों को घर तक पहुँचाते हैं। इसलिए स्वस्थ भारत का सपना स्वच्छ भारत से होकर गुजरता है।

स्वच्छता केवल सफाईकर्मी की जिम्मेदारी नहीं, हमारी दैनिक आदत होनी चाहिए। हम सूखा और गीला कचरा अलग रखें, खुले में कूड़ा न फेंकें और शौचालय का उपयोग करें। विद्यालय, बाजार और सार्वजनिक स्थान भी अपने घर जितने साफ रखें। बच्चों को उपदेश से अधिक

हमारा व्यवहार सिखाएगा। जब हर नागरिक अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाएगा, तब स्वच्छता अभियान जनजीवन का संस्कार बनेगा। स्वच्छ परिवेश ही स्वस्थ भविष्य की नींव है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत लेख स्वच्छता को दैनिक आचरण और नागरिक जिम्मेदारी से जोड़ते हुए स्वास्थ्य की रक्षा का संदेश देता है। लगभग 120 शब्दों में दृश्यात्मक आरंभ, उपयोगी सुझाव और संकल्पपूर्ण समापन विषय को पूर्ण करते हैं।

त्वरित सुझाव: पहले तीन सूत्र लिखें—गंदगी का प्रभाव, नागरिक के उपाय और स्वस्थ भविष्य—फिर इन्हें एक दृश्यात्मक आरंभ के साथ लेख में जोड़ें।

7(ख). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

कवि सम्मेलन की एक शाम [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अनुभवप्रधान रचनात्मक लेख में दृश्य, ध्वनि और मनोभावों के माध्यम से घटना जीवंत बनती है। कवि सम्मेलन का वर्णन केवल कार्यक्रमों की सूची न होकर साहित्य और श्रोताओं के संबंध का अनुभव होना चाहिए।
- लगभग 120 शब्दों में एक शाम का क्रम चुनें—वातावरण, काव्यपाठ, श्रोताओं की प्रतिक्रिया और मन पर बचा प्रभाव। कल्पित अनुभव लिखा जा सकता है, पर उसे सुसंगत और स्वाभाविक रखें।

चरण 1: प्रारूप और सामग्री का चयन शीर्षक के बाद सीधे सम्मेलन के वातावरण से आरंभ करें। मंच की रोशनी, श्रोताओं की प्रतीक्षा और कवि की वाणी जैसे बिंब चुनें। हास्य तथा गंभीर कविता की अलग प्रतिक्रियाएँ दिखाएँ। अंत में स्पष्ट करें कि उस शाम ने मनोरंजन के साथ संवेदना भी जगाई। किसी वास्तविक कवि का नाम या अप्रमाणित कविता उद्धृत करने की आवश्यकता नहीं है। वर्णन में अपनी अनुभूति और वातावरण का संतुलन बनाएँ।

चरण 2: पूर्ण आदर्श रचनात्मक लेख **कवि सम्मेलन की एक शाम**

उस शाम नगर का सभागार शब्दों के उत्सव में बदल गया था। मंच पर उजली रोशनी थी और सामने उत्सुक चेहरों का समुद्र। संचालक के स्वागत के साथ तालियाँ गूँजीं तो लगा, कविता सचमुच लोगों को जोड़ सकती है।

पहले कवि ने रोजमर्रा की उलझनों पर हास्य सुनाया। ठहाकों के बीच हम अपनी ही आदतों को पहचान रहे थे। फिर एक कवयित्री ने माँ और घर की स्मृतियाँ छेड़ीं। अभी तक हँसता सभागार अचानक शांत हो गया। कुछ आँखों में नमी थी। अंतिम कवि ने प्रकृति बचाने का आह्वान किया तो तालियों में सहमति भी शामिल थी।

लौटते समय सड़क का शोर वही था, पर भीतर कुछ बदल गया था। वह शाम मनोरंजन भर नहीं रही; उसने संवेदना जगाई और शब्दों की शक्ति का नया परिचय दिया।

चरण 3: निष्कर्ष लेख में सम्मेलन का वातावरण, विविध रसों की कविताएँ, श्रोताओं की प्रतिक्रिया और लेखक का अनुभव क्रम से व्यक्त हुए हैं। दृश्यात्मक वर्णन और भावपूर्ण समापन इसे लगभग 120 शब्दों का सुसंगत रचनात्मक लेख बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: सम्मेलन का वर्णन करते समय एक दृश्य, एक ध्वनि और एक भाव अवश्य चुनें; इससे सीमित शब्दों में भी शाम का अनुभव जीवंत बनेगा।

7(ग). निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में रचनात्मक लेख लिखिए :

विज्ञापन की दुनिया [6 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रचनात्मक लेख में विषय से जुड़ा अनुभव, कल्पना और विचार मौलिक ढंग से प्रस्तुत होते हैं। विज्ञापन की दुनिया पर लिखते समय दैनिक जीवन का कोई दृश्य लेख का स्वाभाविक प्रवेश बन सकता है।
- लगभग 120 शब्दों के लेख में प्रभावशाली शीर्षक, सुगठित अनुच्छेद और सार्थक अंत आवश्यक हैं। विज्ञापन की उपयोगिता तथा उसके आकर्षण के प्रभाव को ठोस उदाहरणों से उभारना चाहिए।

चरण 1: लेख का रूप निर्धारित कीजिए शीर्षक 'विज्ञापन की दुनिया' रखिए। यह रचनात्मक लेख है, इसलिए संबोधन, प्रेषक का पता या पत्र जैसा समापन आवश्यक नहीं है। शुरुआत किसी परिचित दृश्य से कीजिए, बीच में उस दृश्य से निकला विचार रखिए और अंत में पाठक को सोचने का अवसर दीजिए। भाषा सहज, चित्रात्मक और प्रवाहपूर्ण रहे।

चरण 2: विषयवस्तु की योजना बनाइए सुबह से रात तक विज्ञापनों की उपस्थिति को आधार बनाइए। अखबार, सड़क और मोबाइल तीन परिचित माध्यम हैं। इनके माध्यम से सूचना और रोजगार का पक्ष सामने आएगा। इसके बाद अतिरंजित दावों और अनावश्यक खरीद की प्रवृत्ति पर विचार रखिए। संतुलित दृष्टि के लिए सभी विज्ञापनों को झूठा न कहें; निर्णय की कसौटी उपभोक्ता का विवेक बने। इस योजना को नीचे लगभग 120 शब्दों के स्वतंत्र लेख में प्रस्तुत किया गया है।

चरण 3: पूरा रचनात्मक लेख लिखिए **विज्ञापन की दुनिया**

सुबह आँख खुलते ही मोबाइल मुस्कराकर कहता है, "यह खरीदो, जीवन बदल जाएगा!" अखबार खोलो तो खुशियाँ छूट पर बिकती मिलती हैं। सड़क के बड़े पर्दों से लेकर रसोई तक विज्ञापनों की रंगीन दुनिया फैली है। यहाँ हर वस्तु अपने साथ सुंदरता, सफलता और प्रतिष्ठा का सपना लाती है। विज्ञापन नई चीजों की जानकारी देते हैं, रोजगार बढ़ाते हैं और उपयोगी अभियानों को लोगों तक पहुँचाते हैं। लेकिन चमकदार शब्द कभी जरूरत और लालच की सीमा मिटा देते हैं। बच्चा खिलौने के लिए जिद करता है और बड़ा आदमी अनावश्यक सामान खरीद लेता है। इसलिए इस दुनिया में प्रवेश करते समय विवेक साथ रखना चाहिए। विज्ञापन रास्ता दिखाएँ, हमारे निर्णयों की डोर अपने हाथ में न लें। असली खुशी किसी पैकेट में बंद नहीं मिलती।

चरण 4: निष्कर्ष लेख विज्ञापनों की सर्वव्यापकता का जीवंत चित्र प्रस्तुत करता है और उनकी उपयोगिता स्वीकार करते हुए विवेकपूर्ण खरीद का संदेश देता है। उसका आरंभ, विस्तार और समापन एक ही केंद्रीय विचार से जुड़े हैं।

त्वरित सुझाव: किसी परिचित दृश्य से आरंभ करके उसके पीछे छिपा विचार उभारिए; लगभग 120 शब्दों के लेख में उदाहरणों की भीड़ के बजाय एक स्पष्ट केंद्रीय भाव रखिए।

8(i)(a). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :

कहानी का नाट्य रूपांतरण करते समय कहानीकार द्वारा विवरण के रूप में व्यक्त प्रसंगों या मानसिक द्वंद्व के दृश्यों को नाटक में किस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कहानी में कथावाचक विवरण देकर घटना और मन:स्थिति समझा सकता है; नाटक में वही सामग्री पात्रों के अभिनय और संवाद के माध्यम से मंच पर व्यक्त होती है।
- रूपांतरण में कथा का मूल भाव बचाते हुए वर्णन को दृश्य क्रिया में बदलना आवश्यक है। मानसिक द्वंद्व के लिए स्वगत कथन उपयोगी है।

चरण 1: वर्णन को दृश्य में बदलिए जिन घटनाओं का कहानीकार केवल विवरण देता है, उन्हें पात्रों की बातचीत, हावभाव और गतिविधियों से सामने लाया जाता है। इससे दर्शक घटना को घटित होते देखता है। आवश्यक मंचनिर्देश परिवेश और अभिनय का संकेत देते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखिए कहानी के विवरणात्मक प्रसंगों को नाटक में पात्रों के संवाद, अभिनय और मंचीय क्रियाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। मानसिक द्वंद्व को स्वगत कथन, चेहरे के भाव, हावभाव तथा उपयुक्त ध्वनि और प्रकाश संकेतों से दृश्य रूप दिया जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष विवरण दृश्य क्रिया बनता है और भीतरी संघर्ष स्वगत कथन तथा अभिनय से व्यक्त होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दोनों पक्ष रखिए: विवरण के लिए संवाद और क्रिया, मानसिक द्वंद्व के लिए स्वगत कथन और हावभाव।

अथवा

8(i)(b). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :
दृश्य-श्रव्य माध्यमों की तुलना में रेडियो नाटक की क्या-क्या सीमाएँ हैं ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रेडियो केवल श्रव्य माध्यम है। श्रोता को पात्र और घटनाएँ दिखाई नहीं देते, इसलिए नाटक का संसार शब्द तथा ध्वनि के सहारे बनता है।
- दृश्य संकेतों के अभाव में पात्रों की पहचान, परिवेश और क्रिया को आवाज तथा संवादों से स्पष्ट करना पड़ता है।

चरण 1: दृश्य संकेतों के अभाव को समझिए दृश्य-श्रव्य माध्यम में वेशभूषा, चेहरा, रंगमंच और मूक अभिनय सीधे दिखाई देते हैं। रेडियो में इनका प्रत्यक्ष उपयोग नहीं हो सकता। अत्यधिक पात्र या अस्पष्ट आवाजें श्रोता को भ्रमित कर सकती हैं; ध्वनि संयोजन और स्पष्ट संवाद इसी सीमा को सँभालते हैं।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लिखिए रेडियो नाटक में दृश्य नहीं दिखाए जा सकते। पात्रों की वेशभूषा, हावभाव, मूक अभिनय और दृश्य परिवर्तन प्रत्यक्ष व्यक्त नहीं होते। पात्रों की पहचान तथा स्थान, समय और घटनाओं का बोध संवाद, स्वर और ध्वनि प्रभावों से ही कराना पड़ता है।

चरण 3: निष्कर्ष रेडियो नाटक की प्रमुख सीमा दृश्य का अभाव और अभिव्यक्ति के लिए श्रव्य संकेतों पर निर्भरता है।

त्वरित सुझाव: तुलना करते समय दृश्य माध्यम की सुविधाएँ गिनाकर बताइए कि रेडियो में उनका बोध आवाज और ध्वनि से कराना पड़ता है।

8(ii)(a). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :
नए और अप्रत्याशित विषयों पर लेखन में कौन-कौन सी बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अप्रत्याशित विषय पर लेखन में विषय की सही समझ, स्वतंत्र चिंतन और निजी अनुभवों का सृजनात्मक उपयोग आवश्यक है।
- विचारों को विषय के अनुरूप क्रम देना तथा भाषा को सहज, प्रभावशाली और मौलिक रखना अच्छे लेखन का आधार है।

चरण 1: विषय और विचारों की तैयारी ऐसे विषय पहले से रटे हुए नहीं होते। इसलिए सबसे पहले विषय का आशय समझकर उसके संभावित पक्षों पर विचार करना चाहिए। लेखक अपने आसपास की घटनाओं, अनुभवों और कल्पना से सामग्री जुटाए। पूर्वग्रहों तथा तैयारशुदा निष्कर्षों से मुक्त रहकर सोचना विषय को नया दृष्टिकोण देता है।

चरण 2: प्रस्तुति की सावधानियाँ चुने हुए विचारों को आपस में जोड़कर सुसंगत क्रम देना चाहिए। अनावश्यक विस्तार, दोहराव और विषयांतर से बचना आवश्यक है। आरंभ पाठक का ध्यान खींचे, मध्य में विचार विकसित हों और अंत स्वाभाविक हो। जटिल शब्दों के प्रदर्शन से अधिक महत्त्व सहज भाषा और स्पष्ट अभिव्यक्ति का है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर नए और अप्रत्याशित विषयों पर लिखते समय विषय की सही समझ, स्वतंत्र चिंतन, मौलिक दृष्टि तथा अनुभवों का ध्यान रखना चाहिए। विचार क्रमबद्ध हों, भाषा सहज और रोचक हो तथा लेखन में अनावश्यक विस्तार, दोहराव और विषयांतर से बचना चाहिए।

चरण 4: निष्कर्ष विषय की समझ, मौलिक चिंतन, सुसंगत क्रम और सहज भाषा ऐसे लेखन की प्रमुख आवश्यकताएँ हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले विषय को समझने और फिर विचारों की क्रमबद्ध, मौलिक तथा सहज प्रस्तुति की बात लिखें।

अथवा

8(ii)(b). निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर लगभग 40 शब्दों में निर्देशानुसार उत्तर दीजिए :
दूरदर्शन के संदर्भ में 'लाइव प्रसारण' से क्या तात्पर्य है ? यह प्रक्रिया किस प्रकार संभव हो पाती है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लाइव प्रसारण में किसी घटना के घटित होते समय ही उसके दृश्य और ध्वनि दर्शकों तक पहुँचते हैं।
- कैमरा, माइक्रोफोन और संचार संपर्क घटनास्थल को प्रसारण केंद्र तथा दर्शकों से जोड़ते हैं।

चरण 1: लाइव का आशय समझें लाइव का अर्थ घटना का सीधा प्रसारण है। घटना पहले रिकॉर्ड करके बाद में दिखाने के बजाय उसके घटित होते समय ही दर्शक उसे देख और सुन सकते हैं। इसलिए समय की तात्कालिकता और दृश्य-ध्वनि का साथ-साथ पहुँचना इस प्रसारण की मुख्य विशेषताएँ हैं।

चरण 2: प्रसारण की प्रक्रिया समझें घटनास्थल पर कैमरे दृश्य और माइक्रोफोन ध्वनि ग्रहण करते हैं। प्रायः बाह्य प्रसारण वैन की सहायता से इन संकेतों को उपग्रह अथवा अन्य संचार संपर्क द्वारा प्रसारण केंद्र भेजा जाता है। केंद्र इन्हें अपने चैनल पर प्रसारित करता है और दर्शकों के टेलीविजन तक घटना के चित्र तथा आवाज पहुँचते हैं।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लाइव प्रसारण का अर्थ घटना के घटित होते समय ही उसका सीधा दृश्य-श्रव्य प्रसारण है। घटनास्थल के कैमरे और माइक्रोफोन से प्राप्त संकेत बाह्य प्रसारण वैन तथा उपग्रह संपर्क द्वारा प्रसारण केंद्र पहुँचते हैं, जहाँ से दर्शकों तक प्रसारित होते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष लाइव प्रसारण घटना का उसी समय होने वाला सीधा प्रसारण है, जो दृश्य-ध्वनि संकेतों के त्वरित संप्रेषण से संभव होता है।

त्वरित सुझाव: लाइव की परिभाषा के बाद घटनास्थल, प्रसारण संपर्क, केंद्र और दर्शक की कड़ी क्रम से लिखें।

9(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :
भारत में पहला छापाखाना कब, कहाँ और किस उद्देश्य से खोला गया ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भारत में पहले छापाखाने की स्थापना से संबंधित उत्तर में समय, स्थान और उद्देश्य तीनों आवश्यक हैं।
- प्रारंभिक मुद्रण का संबंध पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों की धर्मप्रचार संबंधी आवश्यकताओं से था।

चरण 1: समय और स्थान पहचानें भारत में पहला छापाखाना 1556 में गोवा में स्थापित हुआ था। इसे पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों ने आरंभ किया। उत्तर में वर्ष और स्थान का स्पष्ट उल्लेख आवश्यक है, क्योंकि प्रश्न केवल मुद्रण के सामान्य इतिहास के बारे में नहीं पूछता। यूरोप में छापाखाने के विकास से जुड़ी तारीख को भारत में उसकी स्थापना की तारीख से नहीं मिलाना चाहिए।

चरण 2: स्थापना का उद्देश्य समझाएँ मिशनरियों को ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए धार्मिक पुस्तकें और अन्य उपयोगी सामग्री छापनी थी। छपाई से एक ही सामग्री की अनेक प्रतियाँ तैयार करके लोगों तक पहुँचाना संभव हुआ। इसलिए इस आरंभिक छापाखाने का प्रमुख उद्देश्य धर्मप्रचार था; इसे समाचारपत्रों के प्रकाशन के उद्देश्य से स्थापित पहला छापाखाना बताना उचित नहीं है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भारत में पहला छापाखाना 1556 में गोवा में पुर्तगाली ईसाई मिशनरियों द्वारा स्थापित किया गया था। इसका प्रमुख उद्देश्य ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार करना था। इसके माध्यम से धार्मिक पुस्तकें तथा धर्मप्रचार की अन्य सामग्री छापी जाती थी, ताकि उनकी अनेक प्रतियाँ लोगों तक पहुँचाई जा सकें। इस प्रकार भारत में मुद्रण के प्रारंभिक विकास का संबंध मिशनरियों की धार्मिक गतिविधियों से था।

चरण 4: निष्कर्ष भारत का पहला छापाखाना 1556 में गोवा में ईसाई धर्म के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से स्थापित हुआ।

त्वरित सुझाव: इस ऐतिहासिक उत्तर को तीन बिंदुओं में याद रखें: 1556, गोवा और ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार।

9(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

पत्रकार कितने प्रकार के होते हैं और अंशकालिक पत्रकार किन्हें कहते हैं तथा इन्हें अन्य किस नाम से जाना जाता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारों का वर्गीकरण उनके रोजगार तथा किसी समाचार संगठन से संबंध के आधार पर किया जा सकता है।
- पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र पत्रकार की कार्य-स्थितियाँ अलग-अलग होती हैं; अंशकालिक पत्रकार को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है।

चरण 1: पत्रकारों के प्रकार बताएँ मुख्यतः पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं: पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र। पूर्णकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी होता है। स्वतंत्र पत्रकार किसी एक संगठन का स्थायी कर्मचारी बने बिना विभिन्न समाचार संगठनों के लिए लिख सकता है। इस भेद को समझने से अंशकालिक पत्रकार की स्थिति स्पष्ट होती है।

चरण 2: अंशकालिक पत्रकार की पहचान करें अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन के लिए नियमित वेतनभोगी कर्मचारी के रूप में काम नहीं करता। वह प्रायः किसी निश्चित क्षेत्र से समाचार भेजता है और उसे संगठन की ओर से निश्चित मानदेय मिलता है। अंशकालिक पत्रकार को स्ट्रिंगर कहते हैं। केवल कम घंटे काम करने वाले हर कर्मचारी को इस अर्थ में स्ट्रिंगर नहीं कहा जा सकता; समाचार संगठन से उसका संबंध भी ध्यान में रखना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर पत्रकार मुख्यतः तीन प्रकार के होते हैं: पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र। अंशकालिक पत्रकार किसी समाचार संगठन का नियमित वेतनभोगी कर्मचारी नहीं होता। वह सामान्यतः किसी विशेष क्षेत्र से उस संगठन को समाचार उपलब्ध कराता है और संगठन से निश्चित मानदेय प्राप्त करता है। ऐसे पत्रकार को स्ट्रिंगर भी कहा जाता है। उसका संगठन से संबंध पूर्णकालिक कर्मचारी जैसा नहीं होता।

चरण 4: निष्कर्ष पत्रकार तीन प्रकार के होते हैं: पूर्णकालिक, अंशकालिक और स्वतंत्र। अंशकालिक पत्रकार को स्ट्रिंगर कहते हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में तीनों प्रकार गिनाने के बाद अंशकालिक पत्रकार का रोजगार-संबंध, पारिश्रमिक और स्ट्रिंगर नाम अवश्य लिखें।

9(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए :

विशेष लेखन क्या है और यह क्यों किया जाता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विशेष लेखन में सामान्य समाचारों से आगे बढ़कर किसी विशिष्ट विषय या क्षेत्र का तथ्यपूर्ण और गहन विवेचन किया जाता है।
- विषय की पृष्ठभूमि, तकनीकी जानकारी और विशेषज्ञों के मत पाठक को घटनाओं का अर्थ समझने में सहायता देते हैं।

चरण 1: अर्थ स्पष्ट कीजिए अर्थव्यवस्था, विज्ञान, खेल, कृषि, पर्यावरण या कानून जैसे किसी विशेष क्षेत्र पर केंद्रित लेखन विशेष लेखन कहलाता है। इसमें लेखक को विषय का पर्याप्त ज्ञान और उससे संबंधित शब्दावली की समझ होनी चाहिए। केवल किसी घटना की सूचना देना इसका पूरा उद्देश्य नहीं होता।

चरण 2: उद्देश्य समझिए पाठक हर क्षेत्र का विशेषज्ञ नहीं होता। इसलिए विशेष लेखन जटिल तथ्यों, प्रक्रियाओं और घटनाओं की पृष्ठभूमि को सरल बनाता है। यह घटनाओं के कारण, प्रभाव और महत्त्व स्पष्ट करता है तथा पाठक की जिज्ञासा शांत करके उसे सूचित दृष्टिकोण बनाने में सहायता देता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर किसी विशिष्ट विषय या क्षेत्र, जैसे विज्ञान, अर्थव्यवस्था, खेल, कृषि या कानून, पर गहन जानकारी के साथ किया गया लेखन विशेष लेखन कहलाता है। यह सामान्य समाचारों से आगे बढ़कर तथ्यों की पृष्ठभूमि, कारण और प्रभाव स्पष्ट करता है। इसका उद्देश्य जटिल विषयों को सरल बनाना, पाठकों की विशेष रुचियों और जिज्ञासाओं को संतुष्ट करना तथा उनकी समझ विकसित करना है।

चरण 4: निष्कर्ष विशेष लेखन विषयविशेष की गहरी और सरल व्याख्या द्वारा पाठक को जानकारी तथा समझ प्रदान करता है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में विशिष्ट क्षेत्र और उद्देश्य में सरल व्याख्या, पृष्ठभूमि तथा पाठक की समझ अवश्य लिखिए।

10(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'हो जाए न पथ में रात कहीं' – इस काव्य पंक्ति में कवि ने किस पथ की ओर संकेत किया है ? कवि ने 'रात' शब्द का प्रयोग करके कौन-सी आशंका व्यक्त की है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हरिवंशराय बच्चन की कविता में घर लौटते पथिक का चित्र जीवन की यात्रा का भी संकेत देता है।
- दिन का ढलना समय की सीमितता और प्रियजनों तक शीघ्र पहुँचने की उत्कंठा को व्यक्त करता है।

चरण 1: पथ का संकेत पहचानिए कविता में पथिक दिन ढलते देखकर घर जल्दी पहुँचने को व्याकुल है। इस प्रसंग में पथ घर तक पहुँचने का मार्ग है; व्यापक अर्थ में वह जीवनपथ का संकेत भी देता है, जिस पर मनुष्य अपने प्रियजनों और लक्ष्य की ओर बढ़ता है।

चरण 2: रात की आशंका बताइए पथिक को आशंका है कि कहीं घर पहुँचने से पहले अँधेरा न हो जाए और उसका मिलन अधूरा न रह जाए। प्रतीकात्मक स्तर पर रात जीवन के अंत की ओर भी संकेत करती है। समय समाप्त होने से पहले गंतव्य पाने की चिंता उसकी गति बढ़ाती है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि ने घर लौटने के मार्ग और प्रतीक रूप में जीवनपथ की ओर संकेत किया है। रात से आशंका है कि प्रियजनों तक पहुँचने से पहले अँधेरा न हो जाए; व्यापक अर्थ में जीवन समाप्त होने से पहले लक्ष्य अधूरा न रह जाए।

चरण 4: निष्कर्ष पथ घर तथा जीवन के गंतव्य का मार्ग है; रात समय चुकने और गंतव्य तक न पहुँच पाने की आशंका व्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: घर लौटते पथिक का सीधा संदर्भ पहले लिखिए, फिर पथ और रात के प्रतीकात्मक अर्थ संक्षेप में जोड़िए।

10(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'बात सीधी थी पर' कविता में भाषा के विषय में व्यंग्य करके कवि क्या सिद्ध करना चाहता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कुँवर नारायण की कविता भाषा और कथ्य के सहज संबंध को सामने रखती है।
- भाषा की कृत्रिम सजावट तब व्यर्थ है जब उससे बात का अर्थ और संप्रेषण ही नष्ट हो जाए।

चरण 1: व्यंग्य का लक्ष्य समझिए कविता में सीधी बात को भाषा के चक्कर में उलझा दिया जाता है। कवि पेच कसने और खोलने की छवि के माध्यम से बताता है कि शब्दों पर अनावश्यक जोर लगाने से बात अपनी सहजता खो बैठती है। भाषा का प्रदर्शन कथ्य को पीछे धकेल देता है।

चरण 2: कवि का आशय स्पष्ट कीजिए कवि भाषा की उपयोगिता को नकारता नहीं है। वह बनावटी कठिनाई और शब्दाडंबर पर व्यंग्य करता है। अच्छी भाषा वही है जो भाव के अनुकूल होकर अर्थ को सहजता से पाठक तक पहुँचाए। कथ्य की स्पष्टता के स्थान पर केवल शब्दकौशल दिखाना कविता को प्रभावशाली नहीं बनाता।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कवि सिद्ध करना चाहता है कि भाषा भावों की सहज अभिव्यक्ति का साधन है। शब्दाडंबर और अनावश्यक भाषायी पेचीदगी सीधी बात को उलझाकर उसका प्रभाव नष्ट कर देते हैं। भाषा कथ्य के अनुकूल, सरल और संप्रेषणीय होनी चाहिए; केवल शब्दकौशल पर्याप्त नहीं है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि के व्यंग्य का उद्देश्य कथ्य के अनुरूप सहज, स्पष्ट और संप्रेषणीय भाषा का महत्त्व स्थापित करना है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में भाषा को गलत न कहें; दोष अनावश्यक शब्दाडंबर का है, जो सीधी बात को उलझा देता है।

10(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'आँगन में ठुनक रहा है ज़िदयाया है' पंक्ति में कौन ज़िदयाया है ? कवि ने 'ठुनक' शब्द द्वारा बाल-मनोविज्ञान के किस पक्ष का वर्णन किया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़िराक़ गोरखपुरी की रुबाई घरेलू जीवन के आत्मीय दृश्य में बालक की सहज चंचलता प्रस्तुत करती है।
- बालक की हठपूर्ण माँग में कल्पनाशीलता, भोलेपन और अपनी इच्छा तुरंत पूरी कराने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

चरण 1: ज़िद करने वाले को पहचानिए आँगन में माँ का छोटा बच्चा ज़िद कर रहा है। वह चाँद को पाने की इच्छा करता है और माँ से उसे लाकर देने की माँग करता है। माँ दर्पण में चाँद की छवि दिखाकर उसकी भोली इच्छा को संतुष्ट करने का उपाय करती है।

चरण 2: ठुनकने का मनोवैज्ञानिक अर्थ समझिए ठुनकना बच्चे के रूठने, मचलने और हठ करने की स्वाभाविक मुद्रा है। बच्चा अपनी इच्छा और वस्तु की वास्तविक उपलब्धता का भेद पूरी तरह नहीं समझता। वह माँ से अपनी मनचाही वस्तु तुरंत पाना चाहता है; उसके व्यवहार में बालसुलभ भोलेपन के साथ माँ पर भरोसा भी झलकता है।

चरण 3: लगभग 40 शब्दों में उत्तर आँगन में माँ का छोटा बच्चा चाँद पाने की ज़िद कर रहा है। ठुनक शब्द बालक के रूठने, मचलने और अपनी इच्छा तुरंत पूरी कराने की प्रवृत्ति को व्यक्त करता है। इससे उसका भोला, हठी और कल्पनाशील बालस्वभाव सजीव हो उठता है।

चरण 4: निष्कर्ष ज़िदयाया हुआ बच्चा चाँद माँग रहा है; ठुनक उसके बालसुलभ हठ, रूठने और भोलेपन को व्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: कौन के उत्तर में बच्चा लिखें और ठुनक के अर्थ में रूठना, मचलना तथा इच्छा पूरी कराने का हठ समझाएँ।

11(क). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
भादों के बीत जाने पर प्रकृति में जो परिवर्तन कवि ने 'पतंग' कविता में दिखाया है उसका वर्णन अपने शब्दों में कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रकृति-चित्रण में ऋतु के परिवर्तन के साथ प्रकाश, आकाश और हवा के रूप को पहचानना आवश्यक है।
- आलोक धन्वा की कविता में शरद का उजला वातावरण बच्चों के पतंग उड़ाने के उत्साह की पृष्ठभूमि बनता है।

चरण 1: परिवर्तन के प्रमुख संकेत भादों की वर्षा समाप्त होने पर शरद आती है। कविता में खरगोश की आँखों जैसी लाल सुबह और शरद की चमकीली साइकिल का बिंब मिलता है। इससे नई ऋतु की ताजगी तथा उसकी उजली आभा व्यक्त होती है। वर्षा के बाद साफ हुआ आकाश पतंगों के उड़ने के लिए अनुकूल है।

चरण 2: व्याख्या का आधार ऋतु का यह परिवर्तन केवल मौसम की सूचना नहीं है। उजली प्रकृति के बीच बच्चे अपनी कल्पना और साहस के साथ सक्रिय होते हैं। इसलिए उत्तर में वर्षा की समाप्ति से शरद के उजास और वहाँ से पतंग उड़ाने के उल्लास तक का क्रम रखना चाहिए। कविता का केंद्र बालमन है; प्रकृति उसी की उन्मुक्तता को विस्तार देती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर भादों के बीतते ही वर्षा का अँधकार छँट जाता है और उजली शरद आती है। सुबह खरगोश की आँखों जैसी लाल दिखाई देती है। तेज चमक फैलती है; धूप तथा हवा में ताजगी भर जाती है। साफ आकाश में पतंगें उड़ने लगती हैं। प्रकृति का यह खुला, चमकीला वातावरण बच्चों में उत्साह भरता है और उन्हें छतों पर बुलाता है।

चरण 4: निष्कर्ष कवि ने लालिमा भरी सुबह, चमकीली धूप और स्वच्छ आकाश के माध्यम से शरद के आगमन तथा बच्चों के उल्लास का चित्र खींचा है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में सुबह की लालिमा, शरद की चमक और पतंगों के अनुकूल आकाश को बच्चों के उत्साह से जोड़िए।

11(ख). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के
उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए :
'बादल राग' कविता से उद्धृत निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :
'तिरती है समीर-सागर पर
अस्थिर सुख पर दुख की छाया' [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निराला के यहाँ बादल क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक है; उसका प्रभाव समाज के अलग-अलग वर्गों पर अलग पड़ता है।
- प्रस्तुत पंक्तियों में समीर-सागर पर तैरती छाया का दृश्य सुख के अस्थायी होने का भाव भी प्रकट करता है।

चरण 1: बिंब और सामाजिक संकेत हवा के समुद्र पर तैरते बादल की छाया एक गतिशील प्राकृतिक दृश्य है। साथ ही यह उस आशंका का संकेत है जो संपन्न वर्ग के अस्थिर सुख पर मंडराती रहती है। शोषण से प्राप्त सुविधाएँ स्थायी नहीं हैं; क्रांति का बादल उन्हें संकट में डाल सकता है।

चरण 2: व्याख्या का आधार यहाँ दुख की छाया का अर्थ हर मनुष्य के लिए एक जैसा नहीं है। बादल की गर्जना से किसान को आशा और संपन्न वर्ग को भय मिलता है। इसलिए इन पंक्तियों की व्याख्या में कविता की सामाजिक पृष्ठभूमि जोड़नी चाहिए। सुख को अस्थिर कहने से वैभव की अनिश्चितता उभरती है और छाया आगामी परिवर्तन का पूर्वसंकेत बनती है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर इन पंक्तियों में वायु रूपी समुद्र पर तैरते बादल की छाया का चित्र है। कवि संकेत करते हैं कि सांसारिक सुख स्थायी नहीं है; उस पर दुख की आशंका बनी रहती है। विशेषत: शोषक संपन्न वर्ग का सुख क्रांति की संभावना से भयभीत है। बादल परिवर्तन का प्रतीक बनकर उनके वैभव की अस्थिरता और भावी संकट को व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष बादल की छाया सुख की क्षणभंगुरता और शोषक वर्ग पर मंडराते क्रांति के भय को अभिव्यक्त करती है।

त्वरित सुझाव: प्राकृतिक दृश्य का अर्थ बताने के बाद बादल के क्रांति-प्रतीक और संपन्न वर्ग के भय का संबंध स्पष्ट कीजिए।

11(ग). काव्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में लिखिए : तुलसी ने 'कवितावली' के छंदों में तत्कालीन आर्थिक विषमताओं का स्वाभाविक चित्रण किया है। सिद्ध कीजिए कि तुलसी युग चितेरे कवि थे। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- युग-चितेरा वह कवि है जो अपने समय की वास्तविक परिस्थितियों को सजीव रूप में प्रस्तुत करता है।
- कवितावली में आजीविका का संकट, भूख और सामाजिक दुर्दशा तत्कालीन आर्थिक विषमता को सामने लाते हैं।

चरण 1: पाठ के प्रमाण पहचानना तुलसी किसान की खेती, भिखारी की भीख, व्यापारी के व्यापार तथा सेवक की नौकरी के संकट का उल्लेख करते हैं। आजीविका के अभाव में लोग असहाय हैं। पेट की आग उन्हें उचित-अनुचित काम करने और संतान तक बेचने की विवशता में डालती है। यह वर्णन व्यक्तिगत दुख से आगे बढ़कर व्यापक सामाजिक संकट दिखाता है।

चरण 2: व्याख्या का आधार इन उदाहरणों में समाज के अनेक व्यवसाय एक साथ आते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि संकट किसी एक व्यक्ति का नहीं, पूरे सामाजिक जीवन का है। तुलसी भूख को प्रबल प्रेरक शक्ति बताकर मनुष्य की विवशता समझाते हैं। कवि की संवेदना पीड़ित जन के साथ है और वह अपने युग के यथार्थ से दृष्टि नहीं चुराता।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर तुलसी ने कवितावली में अपने युग की आर्थिक दुर्दशा का सजीव चित्रण किया है। किसान को खेती, व्यापारी को व्यापार, भिखारी को भीख और सेवक को नौकरी नहीं मिलती। जीविका के अभाव में लोग व्याकुल हैं। भूख उन्हें ऊँचे-नीचे कर्म करने तथा संतान तक बेचने को विवश करती है। जनजीवन की ऐसी प्रामाणिक अभिव्यक्ति उन्हें युग-चितेरा सिद्ध करती है।

चरण 4: निष्कर्ष तुलसी ने भूख, बेरोजगारी और आजीविका के संकट के माध्यम से अपने समय की आर्थिक विषमता और जनपीड़ा को मूर्त किया है।

त्वरित सुझाव: युग-चितेरा सिद्ध करने के लिए केवल प्रशंसा न लिखें; खेती, व्यापार, नौकरी और भूख के पाठगत प्रमाण दीजिए।

12(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : घर के अन्य सहायकों की अपेक्षा भक्तिन की महादेवी जी से अंतरंगता किस प्रकार प्रमाणित होती है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- महादेवी वर्मा के संस्मरण में भक्तिन और लेखिका का संबंध केवल वेतन और काम का संबंध नहीं है।
- अंतरंगता का प्रमाण व्यक्तिगत जीवन पर प्रभाव, सुख-दुख में साथ और अलग होने की अनिच्छा से मिलता है।

चरण 1: अंतरंगता के पाठगत प्रमाण भक्तिन लेखिका की दिनचर्या और भोजन की आदतों को प्रभावित करती है तथा लेखिका भी उसकी सहजताओं और कमियों को स्वीकार करती हैं। भक्तिन अपने को सामान्य नौकर की तरह अलग नहीं मानती। लेखिका के संभावित कारावास में भी साथ जाने का उसका आग्रह संकट में संग रहने की भावना प्रकट करता है।

चरण 2: व्याख्या का आधार लेखिका भक्तिन को हटाकर उसकी जगह कोई दूसरा सहायक रख देने की बात सहजता से नहीं सोच सकतीं। दोनों का लंबा साथ एक-दूसरे के स्वभाव को स्वीकार करने में दिखाई देता है। भक्तिन की सेवा में अधिकार और अपनापन है। इसीलिए उसके व्यवहार को केवल काम की कुशलता से नहीं, लेखिका के प्रति लगाव से समझना चाहिए।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर अन्य सहायक काम और वेतन से जुड़े थे, जबकि भक्तिन लेखिका के जीवन का आत्मीय अंग बन गई थी। वह उनके भोजन और दिनचर्या को प्रभावित करती थी तथा उनके सुख-दुख में साथ रहती थी। लेखिका के जेल जाने की संभावना पर वह भी साथ जाने को तैयार थी। यह निष्ठा और अलग न होने का भाव उनकी अंतरंगता प्रमाणित करते हैं।

चरण 4: निष्कर्ष भक्तिन का महादेवी जी से संबंध सामान्य सेवक-स्वामी संबंध से आगे, परस्पर स्वीकार और संकट में भी साथ निभाने का आत्मीय संबंध था।

त्वरित सुझाव: अंतरंगता के उत्तर में दिनचर्या पर प्रभाव और जेल में भी साथ जाने की तत्परता जैसे ठोस प्रसंग जोड़िए।

12(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : 'खाली मन तथा भरी जेब' से लेखक का क्या आशय है ? इन बातों से बाज़ार कैसे प्रभावित होता है ? 'बाज़ार दर्शन' पाठ के संदर्भ में लिखिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- खाली मन का अर्थ आवश्यकता और उद्देश्य का स्पष्ट न होना है; भरी जेब पर्याप्त धन होने का संकेत है।
- जैनेंद्र कुमार खरीदारी में विवेक तथा वास्तविक जरूरत पहचानने पर बल देते हैं।

चरण 1: पाठ का आशय समझें यहाँ खाली मन का अर्थ केवल उदासी या काम का अभाव नहीं है। ऐसा व्यक्ति अपनी आवश्यकता तय किए बिना बाज़ार पहुँचता है। उसके पास वस्तुओं को परखने का निश्चित आधार नहीं होता। भरी जेब उसे खरीदने की सामर्थ्य देती है, इसलिए धन और अनिश्चित इच्छा का मेल आकर्षक वस्तुओं के प्रति उसका संयम घटाता है।

चरण 2: बाज़ार पर प्रभाव जोड़ें बाज़ार की चमक ऐसे ग्राहक को अपनी ओर खींचती है। वह उपयोगिता के स्थान पर आकर्षण को महत्त्व देकर अनावश्यक सामान खरीदता है। इससे विक्रय और बाज़ार का आकर्षण बढ़ता है; ग्राहक के धन का सदुपयोग नहीं हो पाता। लेखक जरूरत पहचानकर खरीदारी करने वाले व्यक्ति को बाज़ार का सही लाभ लेने वाला मानते हैं।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर खाली मन से लेखक का आशय अपनी आवश्यकताओं के प्रति स्पष्टता और उद्देश्य के अभाव से है। भरी जेब धन की उपलब्धता बताती है। ऐसा व्यक्ति बाज़ार की चमक से आसानी से मोहित होकर अनावश्यक वस्तुएँ खरीद लेता है। उसकी असंयमित खरीदारी बाज़ार के आकर्षण और बिक्री को बढ़ाती है। इस प्रकार आवश्यकता के स्थान पर प्रलोभन उपभोक्ता के व्यवहार को संचालित करने लगता है।

चरण 4: निष्कर्ष बाज़ार का प्रभाव तभी उपयोगी है, जब खरीदारी को वास्तविक जरूरत और विवेक नियंत्रित करें।

त्वरित सुझाव: खाली मन को आवश्यकताओं की अस्पष्टता और भरी जेब को क्रयशक्ति से जोड़कर उनका संयुक्त प्रभाव बताइए।

12(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60 शब्दों में दीजिए : "रिश्तों का बंधन हमारी बौद्धिक क्षमता, तार्किक शक्ति को कमजोर करता है।" 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर सिद्ध कीजिए। [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लेखक का तर्क इंदर सेना पर पानी फेंकने को पानी की बरबादी मानता है।
- जीजी की ममता और आस्था लेखक के व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

चरण 1: लेखक की तार्किक आपत्ति स्पष्ट करें सूखे के दिनों में इंदर सेना पर पानी डालने की परंपरा लेखक को अनुचित लगती है। जब पीने के लिए पानी की कमी है, तब पानी बहाने से वर्षा कैसे होगी—उनकी आपत्ति इसी व्यावहारिक विचार पर टिकी है। वे इस प्रथा को

अंधविश्वास मानकर उसका विरोध करते हैं। यह उनका स्वतंत्र बौद्धिक और तार्किक पक्ष है।

चरण 2: जीजी के प्रभाव का विश्लेषण करें जीजी इसे त्याग, दान और लोकविश्वास से जोड़ती हैं। वे बीज देने पर फसल पाने जैसी उपमा से लेखक को समझाती हैं। लेखक उनके तर्क से पूर्णतः सहमत नहीं होते, फिर भी जीजी के स्नेह, आदर और भावनात्मक संबंध के कारण उनका दृढ़ विरोध शिथिल होता है। अतः प्रसंग में संबंधों का प्रभाव निर्णय और आचरण पर पड़ता है।

चरण 3: लगभग 60 शब्दों में उत्तर लेखक इंदर सेना पर पानी फेंकने को सूखे में पानी की बरबादी और अंधविश्वास मानते थे। जीजी इसे दान, त्याग और वर्षा के लोकविश्वास से जोड़ती थीं। लेखक उनके तर्क से पूरी तरह सहमत नहीं थे, किंतु जीजी की ममता और आत्मीयता के आगे उनका विरोध कमजोर पड़ जाता था। यह प्रसंग दर्शाता है कि रिश्तों का भावनात्मक दबाव तार्किक दृढ़ता को प्रभावित करता है।

चरण 4: निष्कर्ष पाठ में लेखक की तर्कशीलता और जीजी के प्रति आत्मीयता का द्वंद्व इस कथन का आधार है।

त्वरित सुझाव: पहले लेखक की पानी बचाने की आपत्ति बताइए, फिर जीजी के स्नेह से विरोध शिथिल होने का प्रसंग जोड़िए।

13(क). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : "हाय वह अवधूत आज कहाँ है !" 'शिरीष के फूल' पाठ में लेखक के इस कथन से क्या संकेत मिलता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- अवधूत का संकेत महात्मा गांधी के अनासक्त, निर्भय और लोकहितकारी व्यक्तित्व की ओर है।
- शिरीष की प्रतिकूलता में अविचल रहने की विशेषता गांधीजी के जीवन से जुड़ती है।

चरण 1: अवधूत की पहचान करें लेखक का संकेत महात्मा गांधी की ओर है। यहाँ अवधूत ऐसे व्यक्ति को कहा गया है जो स्वार्थ और मोह से मुक्त होकर जीवन जीता है। इस संबोधन को किसी अज्ञात साधु का उल्लेख नहीं समझना चाहिए। गांधीजी का अनासक्त और दृढ़ व्यक्तित्व ही कथन का केंद्र है। हिंसा के वातावरण में उनका अहिंसक आचरण शिरीष की सहनशीलता का मानवीय उदाहरण बनता है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखक का संकेत महात्मा गांधी की ओर है। वे शिरीष की तरह विपरीत परिस्थितियों में भी अविचल रहते थे। सांप्रदायिक हिंसा के बीच उन्होंने प्रेम, सत्य और अहिंसा का संदेश दिया। कथन में ऐसे निर्भय, अनासक्त लोकसेवी के अभाव की पीड़ा व्यक्त है।

चरण 3: निष्कर्ष इस कथन में गांधीजी के आदर्श व्यक्तित्व का स्मरण और उनके अभाव की वेदना प्रकट होती है।

त्वरित सुझाव: अवधूत की पहचान गांधीजी के रूप में करके अनासक्ति, प्रतिकूलता और लोकसेवा से उसका संबंध स्पष्ट कीजिए।

13(ख). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए : 'श्रम विभाजन...मेरी कल्पना...समाज' पाठ में लेखक के अनुसार आदर्श समाज किसे माना गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आंबेडकर का आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता तथा भ्रातृत्व पर आधारित है।
- सामाजिक गतिशीलता और सबके हितों का आदान-प्रदान इस समाज की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

चरण 1: आदर्श समाज के आधार पहचानें लेखक जन्म पर आधारित ऊँच-नीच और स्थिर सामाजिक विभाजन का विरोध करते हैं। उनके अनुसार समाज के सभी सदस्यों को समान सम्मान और अवसर मिलने चाहिए। स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व परस्पर जुड़े हुए आधार हैं; केवल एक आधार का उल्लेख उत्तर को अधूरा बना देगा। सामाजिक संबंध खुले होने पर एक वर्ग में होने वाला परिवर्तन दूसरे वर्गों तक

भी पहुँचता है और समाज जड़ नहीं बनता।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लेखक के अनुसार आदर्श समाज स्वतंत्रता, समता और भ्रातृत्व पर आधारित होता है। उसमें सभी को समान अवसर मिलते हैं, जातिगत ऊँच-नीच नहीं होती और सामाजिक गतिशीलता बनी रहती है। विभिन्न वर्गों में संपर्क तथा हितों का मुक्त आदान-प्रदान होता है।

चरण 3: निष्कर्ष आदर्श समाज में समान मानवीय गरिमा और सक्रिय सामाजिक सहभागिता सुनिश्चित होती है।

त्वरित सुझाव: तीन आधार—स्वतंत्रता, समता, भ्रातृत्व—लिखकर सामाजिक गतिशीलता और परस्पर संपर्क की विशेषताएँ जोड़िए।

13(ग). गद्य खंड पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'पहलवान की ढोलक' पाठ के आधार पर लिखिए लुट्टन पहलवान अपने पुत्रों को क्या शिक्षा दिया करता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- लुट्टन के लिए ढोल की ताल कुश्ती की प्रेरणा और मार्गदर्शक थी।
- पुत्रों को दी गई शिक्षा में गुरु का सम्मान, अभ्यास और आत्मविश्वास मुख्य हैं।

चरण 1: शिक्षा का आधार समझें लुट्टन स्वयं ढोल की ताल से प्रेरणा लेकर पहलवान बना था। इसलिए वह अपने पुत्रों को भी ढोलक के साथ अभ्यास कराता और उसे गुरु मानने को कहता था। ढोलक की अलग-अलग ध्वनियाँ उसे दाँव लगाने और प्रतिद्वंद्वी का मुकाबला करने की प्रेरणा देती थीं। अपने अनुभव से मिली यही सीख वह अगली पीढ़ी तक पहुँचाना चाहता था। उसके लिए विजय का आधार केवल शारीरिक बल नहीं, बल्कि ताल से मिलने वाला साहस और सही दाँव भी था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर लुट्टन अपने पुत्रों को ढोलक को गुरु मानकर उसका आदर करने की शिक्षा देता था। वह उन्हें ढोल की ताल पर कुश्ती के दाँव-पेंच सीखने, नियमित अभ्यास करने और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी साहस तथा आत्मविश्वास बनाए रखने को कहता था।

चरण 3: निष्कर्ष लुट्टन की शिक्षा ढोलक के प्रति श्रद्धा, कुश्ती के अभ्यास और साहस पर केंद्रित थी।

त्वरित सुझाव: उत्तर में ढोलक को गुरु मानने की सीख अवश्य जोड़ें; केवल व्यायाम का उल्लेख पर्याप्त नहीं है।

14(क). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :
'यशोधर बाबू पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हुए पुरानी परंपरा से विशेष जुड़ाव महसूस करते हैं' – इस कथन के आलोक में यशोधर बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चरित्र-चित्रण में व्यक्ति की सोच और व्यवहार के उदाहरण दिए जाते हैं।
- यशोधर बाबू का किशनदा के संस्कारों से जुड़ाव उनके परंपराप्रिय स्वभाव का आधार है।

चरण 1: चरित्र की विशेषताएँ पहचानें यशोधर बाबू सादगी, मर्यादा और पुराने सामुदायिक संस्कारों को महत्त्व देते हैं। किशनदा उनके आदर्श हैं। बदलते पारिवारिक तौर-तरीकों और दिखावे से उन्हें असहजता होती है। विवाह की वर्षगाँठ के आधुनिक आयोजन में भी उनकी झिझक परंपरा से इसी गहरे जुड़ाव को प्रकट करती है।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर यशोधर बाबू सादगीप्रिय, मर्यादित और परंपरानिष्ठ व्यक्ति हैं। वे किशनदा के संस्कारों को आदर्श मानते हैं तथा पुरानी सामाजिक आत्मीयता से जुड़े हैं। परिवार का आधुनिक रहन-सहन और सिल्वर वैडिंग का उत्सव उन्हें असहज करते

हैं; वे नए मूल्यों से सहज सामंजस्य नहीं बिठा पाते।

चरण 3: निष्कर्ष उनका परंपराप्रेम सादगी, पुराने आदर्शों और आधुनिक परिवर्तनों के प्रति संकोच में दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: चरित्र की हर विशेषता को पाठ के प्रसंग से जोड़ें; किशनदा और सिल्वर वैडिंग उपयोगी उदाहरण हैं।

14(ख). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

'जूझ' पाठ के कथानायक को खेती के काम की अपेक्षा पाठशाला जाना क्यों अच्छा लगता था ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कथानायक शिक्षा को भविष्य सुधारने का साधन मानता है।
- खेती के श्रम और पाठशाला के बौद्धिक वातावरण का अंतर उसकी रुचि स्पष्ट करता है।

चरण 1: पाठशाला की ओर आकर्षण समझें खेती में कथानायक का समय कठोर परिश्रम में बीतता था और उसे उन्नति का रास्ता दिखाई नहीं देता था। पाठशाला में सीखने, मित्रों के साथ रहने और अपनी प्रतिभा विकसित करने का अवसर था। उसे लगता था कि पढ़ा-लिखा व्यक्ति नौकरी करके अपने जीवन की दिशा बदल सकता है। इसी विश्वास के कारण वह खेत के काम के बीच भी पढ़ने के अवसर के लिए संघर्ष करता है। पढ़ाई के प्रति उसका आकर्षण सुविधाभोग नहीं, जीवन की कठिनाइयों से ऊपर उठने की आकांक्षा थी।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर कथानायक को खेती का कठोर और एकरस श्रम उन्नति का अवसर नहीं देता था। पाठशाला में उसे ज्ञान, साथियों का संग और अपनी प्रतिभा विकसित करने का अवसर मिलता था। वह शिक्षा से आजीविका सुधारकर गरीबी तथा खेती की विवशता से निकलना चाहता था।

चरण 3: निष्कर्ष पाठशाला उसे ज्ञान, व्यक्तित्व के विकास और बेहतर भविष्य की आशा देती थी।

त्वरित सुझाव: खेती की कठिनाई बताने के साथ शिक्षा से भविष्य बदलने की इच्छा भी लिखें; दोनों कारण जुड़े हैं।

14(ग). निम्नलिखित तीन प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़कर किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 40 शब्दों में दीजिए :

"मुअनजो-दड़ो में प्राप्त वस्तुओं में औज़ार तो है, पर हथियार नहीं" कथन के आधार पर स्पष्ट कीजिए कि सिंधु सभ्यता किस प्रकार की सभ्यता रही होगी। [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पुरातात्त्विक वस्तुओं से सभ्यता की सामाजिक प्राथमिकताओं का अनुमान लगाया जाता है।
- औज़ार श्रम और उत्पादन को, जबकि हथियार युद्ध तथा सैन्य शक्ति को सूचित करते हैं।

चरण 1: औज़ार और हथियार का अंतर समझें कथन में औज़ारों की उपलब्धता रचनात्मक श्रम, कृषि और शिल्प की महत्ता दिखाती है। हथियारों का अभाव यह संकेत देता है कि युद्ध और सैनिक प्रदर्शन उस संस्कृति की प्रमुख पहचान नहीं थे। पाठ की दृष्टि में उसकी समृद्धि का केंद्र सामान्य नागरिकों का जीवन और उपयोगी निर्माण था।

चरण 2: लगभग 40 शब्दों में उत्तर औज़ारों की प्राप्ति और हथियारों के अभाव से सिंधु सभ्यता श्रमशील, रचनात्मक और शांतिप्रिय प्रतीत होती है। वहाँ कृषि, शिल्प, व्यापार तथा नागरिक जीवन को महत्त्व मिलता होगा। युद्ध और सैन्य शक्ति के प्रदर्शन की अपेक्षा उपयोगी निर्माण और सामूहिक सुख-समृद्धि उसकी प्राथमिकताएँ रही होंगी।

चरण 3: निष्कर्ष सिंधु सभ्यता का स्वरूप युद्धप्रधान होने के बजाय श्रम, शांति और नागरिक कल्याण से जुड़ा दिखाई देता है।

त्वरित सुझाव: औज़ारों से उत्पादन और हथियारों के अभाव से शांतिप्रियता का संबंध समझाकर निष्कर्ष निकालें।